ज्ञानामृत

अक्तूबर, 1987 वर्ष 23 ❋ अंक 4 मूल्य 1.75

न्यूयार्क १५ सितम्बर : *संयक्तराष्ट्रसंघ के मुख्यालय में 'पीस बैल' के समक्ष, ब्र.कु. ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी को माता वेसिली एस. सफ्रोन्चुक, राजनीतिक तथा सुरक्षा परिषद के मामलों के अंडर सेक्रेटरी जनरल द्वारा 'पीस दूत' की पदवी देने के पश्चात्, यू.के., ब्राजील, कीन्या तथा ऑस्ट्रेलिया के बी.के. प्रतिनिधि चित्र में उपस्थित है ।*

बम्बई : *दादी प्रकाशमणी जी के न्यूयार्क से वापस भारत आने पर महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें स्टेट गेस्ट के रूप में सम्मान दिया । एयरपोर्ट पर राज्य शिष्टाचार के अधिकारी-वर्ग के साथ दादी जी, मोहिनी बहन तथा कुसम बहन दिखाई दे रही है।*

बम्बई : भ्राता एस.डी. शर्मा भारत के उपराष्ट्रपति जी का ब्र.कु. उषा अभिनन्दन करते हुए।

जयपुर : राजभवन में आयोजित 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए राजस्थान के महामहिम राज्यपाल दादा बसन्तराव पाटिल, दादी प्रकाशमणी जी, ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी तथा मोहिनी जी।

दिल्ली 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' के कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह। दीप प्रज्वलित कर रहे हैं पर्यटन एवं उड्डयन राज्यमन्त्री भ्राता जगदीश टाइटलर जी, भ्राता राजेन्द्र अवस्थी जी, मुनि श्री डा० नागराज जी, दादी प्रकाशमणि जी, श्रीमती कमला रामचन्द्रन, भ्राता के.के. माथुर, दादी हृदयमोहिनी जी तथा न्यायमूर्ति सेन जी।

बम्बई : 'मेडिटेशन इज़ निओ इंजीनियरिंग' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में प्रसिद्ध गीतकार भ्राता ओमव्यास डॉ. रामानी जी, ब्र.कु. शील इन्द्रा जी, भ्राता ब्र.कु.जगदीश जी, भ्राता जयंती भाई तथा ब्र.कु.मोहन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

जयपुर : राजभवन में राजस्थान के राज्यपाल भ्राता बसंतदादा पाटिल दादी जी को स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित कर रहे हैं।

बम्बई : *'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में सम्बोधन कर रहे है महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री भ्राता एस. बी. चवनजी।*

इन्दौर : *'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम उद्घाटन पर दीप प्रज्वलित कर रहे है – ब्र.कु. ओमप्रकाश, डॉ. गरीश पटेल, भ्राता वीरेन्द्र मुन्शी, आकाशवाणी इन्दौर के प्रोड्यूसर भ्राता नेमनाथ जैन, भ्राता शम्भूदयाल सांखी, भ्राता बाबूलाल बाहेती, प्राचार्या नलिनी रेवाडीकर एवं ब.कु. आरती जी।*

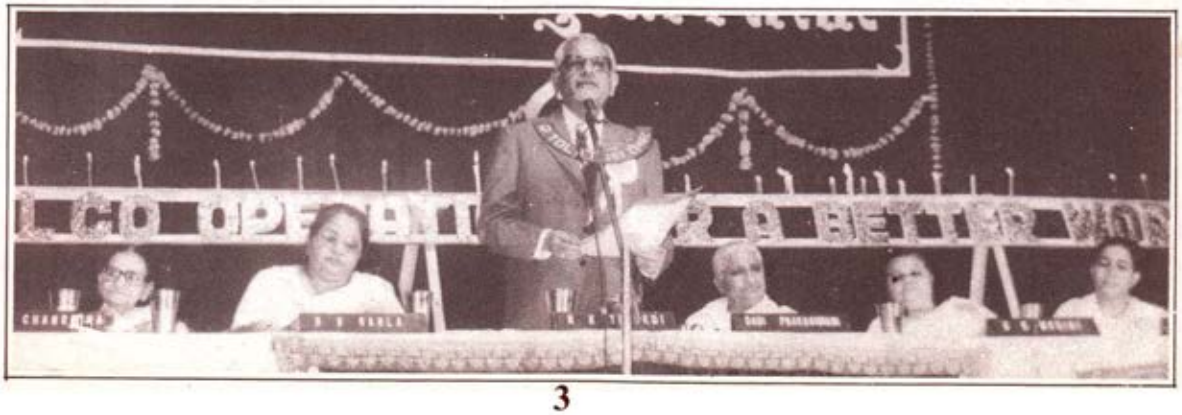

Regd. No. 10563/65-D, (E)—70

In recognition of
a significant contribution to
the programme and objectives of
the International Year of Peace,
proclaimed by the United Nations General Assembly,
the Secretary-General designates

Brahma Kumaris World Spiritual University

as a

Peace Messenger

Javier Pérez de Cuéllar — **15 September 1987**

संयुक्तराष्ट्र संघ द्वारा घोषित अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष के कार्यक्रम तथा लक्ष्यों की पूर्ति के लिये किए गए प्रयासों और पुरुषार्थ के कारण, ब्र.कु. ईश्वरीय विश्वविद्यालय को राष्ट्रसंघ के महा-सचिव, शान्ति दूत की उपाधि प्रदान करते है ।" यह उपाधि न्यूयार्क में दादी प्रकाशमणी जी को १५ सितम्बर को दी गई ।

माउंट आबू-विश्वशान्ति महासम्मेलन में पधारे स्वामी, महामण्डलेश्वर गण, मेडीटेशन हाल में लगे चित्रों को अवलोकन करते हुए ।

अमृत - सूची

१. विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन - - - १
२. विश्व शान्ति में धार्मिक महानुभावों के सहयोग की आवश्यकता - २
३. अनुशासन, सेवाभाव, सिद्धांतों के प्रति समर्पित भावना ही स्वार्णिम युग लाएगी ४
४. 'राजयोग' अर्थात 'मेरा कुछ भी नहीं' - - - ५
५. समय को सफल करो ७
६. प्राकृतिक आपदाओं के निवारण की पांच युक्तियां ९
७. सुखमय संसार मनाने वालों को - - - - १२
८. भ्रष्टा चार कैसे मिटे ? - - - - - १३
९. परमात्मा शिव नारी शक्ति द्वारा स्वर्ग की द्वार खोलते हैं १९
१० राशि और पुरूषार्थ - - - - २०
११. विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया : कितनी साधारण - - - - २१
१२. कंचन और काम का सर्वथा त्याग - - - - २३
१३. प्रेम, एकता से सुखमय संसार - - - - - २४
१४. यह जगती तुम्हें पुकारे - - - - - २४
१५. संस्कृति, सभ्यता की समन्वय सेतु दीवाली - - - - २५
१६. आत्मा - - - - - २६
१७. हम थोड़े से दिन के मेहमान हैं - - - - २७
१८. विश्व में शान्ति आध्यात्म द्वारा ही होगी - - - - - २९
१९. सतोप्रधानता एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण जीवन दर्शन से सतयुग आवश्य आयेगा - - - - ३०
२०. आत्मा का स्वधर्म ही है शान्ति और पवित्रता - - - - - ३१
२१. स्नेह मिलन - - - - - ३२

सम्पादकीय

विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन

आबू में विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन सम्पन्न हुआ । 27सितम्बर, सायंकाल में, सभी महामण्डलेश्वरों तथा महन्तों का स्वागत किया गया और दिनांक बुद्धवार 30सितम्बर को प्रातःकाल स्नेह-मिलन हुआ । इसके बीच चार सत्र हुए जिनमें हरेक महामण्डलेश्वर ने निर्धारित विषय पर अपने विचार व्यक्त किये । इन सभी विषयों का मुख्य शीर्षक था- सर्व के सहयोग से सुखमय संसार ।

सार रूप में सभी धर्माचार्यों के विचार थे कि संसार में उत्तरोत्तर नैतिक मूल्यों का ह्रास होता आया है और आज संसार घोर अधोपतन की अवस्था को प्राप्त हो चुका है । सभी एक स्वर से कह रहे थे कि आणुविक अस्त्रों के आविष्कार से संसार में एक अत्यन्त भयावह संकटमय स्थिति पैदा हो गई है और आज लोग अभक्ष्य का भक्षण, अपेय का पान तथा अपाठ्य का मुद्रण-प्रकाशन -पठन कर रहे हैं, वातावरण में तनाव बहुत बढ़ गया है और आचार एवं व्यवहार अत्यन्त पतनमय अवस्था में है ।

इस मानसिक भूमिका में हरेक विषय को लेकर उस पर विस्तृत चर्चा हुई । यह भली-भांति कहा गया कि स्वरूप-विस्मृति के कारण मनुष्य देहाभिमान के वशीभूत हुआ और उससे छहों विकारों ने उसे ग्रसित किया और उन मनोविकारों के परिणामस्वरूप ही उसके कर्म "विकर्म" अथवा "कुकर्म" बने और संसार में दुःख अशान्ति तथा तनाव की वृद्धि होती आई और आज उसकी "अति" हुई है । अतः यह निष्कर्ष निकला कि अब आध्यात्म और आत्म-बोध द्वारा नर-नारी पुनःस्वरूप-निष्ठ हों और वे ध्यान योग का अभ्यास करें, तभी संसार में सुख और शांति की पुनः स्थापना हो सकती है ।

सभी आमन्त्रित विद्वदजनों ने कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय इस दिशा में अद्वितीय कार्य कर रहा है । सभी ने यहाँ के अनुशासन, संगठन, स्नेह, सेवा-भाव और सरल स्वभाव की प्रशसा की और कहा कि यहां आहार, विचार, व्यवहार और आचार को पवित्र बनाने की जो अनुपम सेवा हो रही है, इसी से सुखमय सतयुगी संसार या समाज की पुनः स्थापना होगी । सभी ने ब्रह्मा बाबा द्वारा निर्दिष्ट मार्ग की सराहना की और दादी प्रकाशमणी जी, दादी जानकी जी तथा दादी चन्द्रमणि जी के कुशल व्यवस्था-कार्य की भी प्रशंसा की और कहा कि विश्व को सुखमय बनाने की योजना में वे सदा सहयोगी रहेंगे । सभी का यह भी मत था कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षायें प्राचीन भारतीय अध्यात्म, संस्कृति और दर्शन से सम्मत हैं और विवेकानुकूल हैं तथा जिस सरल एवं स्नेहमय विधि से ब्रह्माकुमारी बहनें यह शिक्षा जन-जन को दे रही हैं, वही इस समय की मांग है ।

लगभग तीन दिन के इस सम्मेलन में सभी वक्ता अपने भावों में एक-दूसरे के बहुत समीप आ गये और उनमें परस्पर स्नेह बढ़ा तथा एक-दूसरे के बारे में उन्हें अधिक जानकारी हुई । इसके फलस्वरूप सभी धर्माचार्यों ने कहा कि अब उन्होंने इस संस्था के कार्य को निकटता से देखा और जाना है और इस संस्था के विषय में जन-साधारण को या किन्हीं धार्मिक संस्थाओं अथवा धर्माचार्यों को जो भ्रान्तियां हैं, वे उनका निराकरण अपने अनुभव से करेंगे ।

अन्त में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित हुआ जिसमें शिक्षा में नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक शिक्षा को ठीक स्थान देने, धार्मिक संस्थानों द्वारा एक दूसरे पर कुठाराघात न किये जाने, धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार से जन-जन को बचाने, आपसी मामलों को सुलझाने के लिए अहिंसा-युक्त ही विधि-विधानों का प्रयोग करने आदि पर बल दिया गया और सभी का आह्वान किया गया कि वे सुख-शान्तिमय संसार के निर्माण में सहयोगी बनें।

इस प्रकार, यह त्रिदिवसीय आध्यात्मिक महासम्मेलन निर्विघ्न समाप्त हुआ और सफल रहा। इसमें विभिन्न मतों और मठों के प्रतिनिधि होने पर भी तनिक भी किसी ने एक-दूसरे पर कटु आलोचना नहीं की न कोई किसी कारण से किसी से भी असन्तुष्ट था। बल्कि, सम्मेलन की पूरी अवधि में प्रेम, हर्षोल्लास, मैत्री, सहयोग और एकता ही का वातावरण बना हुआ था और सभी शान्ति का अनुभव कर रहे थे और एक आध्यात्मिक परिवार के सदस्यों की न्यायीं निकटता अनुभव करते थे। इस दृष्टि से भी यह सम्मेलन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक वृतान्त माना जायेगा। **जगदीश**

विश्वशान्ति में धार्मिक महानुभावों के सहयोग की आवश्यकता

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणी जी

माऊन्ट आबू, 27सितम्बर। अरावली की पहाड़ियों में स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन का स्वागत समारोह ओमशान्ति भवन के विशाल सभागार में सम्पन्न हुआ। संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने भारत के विभिन्न स्थानों से आए हुए महामण्डलेश्वरों, संत महन्तों का स्वागत करते हुए कहा कि आज भारत को विकारों की अग्नि से बचाने में आप सभी का बहुत बड़ा योगदान है। आप भारत के स्तंभ हैं। कई भक्तों एवं अनुयायियों के मार्ग की पुर्नस्थापना करने के लिए आप धार्मिक महानुभावों की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं सहयोग की वर्तमान समय आवश्यकता है। हम सभी के समन्वित सद्प्रयत्नों से विश्व शान्ति की स्थापना हो सकेगी। सम्मेलन की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका ने कहा कि राजयोग शान्ति का आधार है, विश्व प्रेम शान्ति की कुंजी है एवं पवित्रता शान्ति की जननी है। अतः विश्व में शान्ति लाने के लिए सभी के उमंग उत्साह एवं प्रयासों की आवश्यकता है।

मंच पर उपस्थित महात्माओं का भारत साधु समाज, हरिद्वार के मंत्री डाक्टर श्याम सुन्दर दास शास्त्री जी ने परिचय दिया और कहा कि आबू पर्वत से शान्ति, प्रेम एवं ज्ञान की गंगा सारे विश्व में प्रवाहित होगी। परमार्थ निकेतन हरिद्वार के अध्यक्ष स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आज विश्व में बढ़ती हुई अनैतिकता एवं अशान्ति को दूर करने के लिए पुन विश्व को आध्यात्मिक मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है। भारत साधु समाज देहली के महामन्त्री स्वामी हरिनारायणनन्द जी ने कहा आज शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति से कहीं अधिक आध्यात्मिकता की मानव को ज़रूरत है। मानस मन्दिर हरिद्वार के स्वामी माधवाचार्य जी ने कहा कि आज हम कई तरह की समस्याओं के संकट से घिरे हैं। अतः इनका समाधान आध्यात्मिकता द्वारा ही मिलेगा। भारत साधु समाज दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष स्वामी गणेशानन्द गिरि जी ने कहा कि पवित्रता ही मानव के व्यक्तित्व, परिवार, जाति, राष्ट्र एवं विश्व को जीवित रख सकती है। मंच पर स्वामी हंस प्रकाश जी, अध्यक्ष प्राचीन अवधूत मण्डलाश्रम, हरिद्वार, स्वामी नागेश्वर राय सिकन्दराबाद, स्वामी रामानन्द सरस्वती जी शोलापुर, स्वामी मनूवर्याजी, मंत्री गुजरात प्रदेश भारत साधु समाज, अहमदाबाद, स्वामी चैतन्य दास जी, उदासीन अखाड़ा, दतिया, स्वामी रामदास शास्त्री जी, चार सम्प्रदास आश्रम, वृन्दाबन एवं भक्ति बहन, जलाराम मातृ मन्दिर राजकोट, महन्त स्वामी श्री त्रिभुवन दास जी शास्त्री, वैष्णवाचार्य, रघुनाथ मन्दिर, आबू पर्वत भी उपस्थित थे।

समारोह के प्रारम्भ में सभी महामण्डलेश्वरों एवं महन्तों का संस्था की ओर से चंदन की पुष्प मालाओं द्वारा स्वागत किया गया। बम्बई की दूरदर्शन एवं आकाशवाणी की कलाकार बहन ज्योति गोकरण ने कार्यकम के आरम्भ एवं अन्त में गीत प्रस्तुत किया। समारोह का संचालन दिल्ली की ब्रह्माकुमारी आशा बहन ने किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव सांसद केशरबाई ने प्रस्तुत किया।

विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन का उद्घाटन समारोह

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय "विश्व शान्ति आध्यात्मिक महा/सम्मेलन" का उद्घाटन आबू पर्वत पर 28 सितम्बर को हुआ, इस अवसर का एक दृश्य-मंच पर दीप जलाकर उद्घाटन कर रहे है (बांये से दाये) ब्र० कु० जगदीश चंद्र मुख्य प्रवक्ता, ब्रहमाकुमारी संस्था, स्वामी हरिनारायणानन्द जी, महामंत्री, भारत साधु समाज, दिल्ली, दादी प्रकाशमणी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, आबू, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, अध्यक्ष, परमार्थ आश्रम, हरिद्वार, डा० श्याम सुन्दर दास शास्त्री जी, मन्त्री, भारत साधू समाज हरिद्वार ।

(बाए से) ब्र.कु. दादी ह्दय मोहिनी जी, महन्त त्रिभुवन दास शास्त्री, अध्यक्ष रघुनाथ मन्दिर, आबू, स्वामी, माधवाधार्य, अध्यक्ष मानस मन्दिर, कनरवल, हरिद्वार, स्वामी सच्चिदानन्द अध्यक्ष वेदांत निकेतन, अमृतसर, स्वामी रामदास शास्त्री, अध्यक्ष चार सम्प्रदाय वृंदावन, दादी जानकी जी, स्वामी मुनवीर्य जी, सचिव भारत साधु समाज गुजरात तथा अन्य दीप प्रज्वलित करते हुए

(बाएं से) ब्र. कु. शशि, ब्र.कु. महेन्द, ब्र. कु. रमेश, स्वामी धेतन्यदास जी, अध्यक्ष उदासीन अखाड़ा दतिया, स्वामी रामन सरस्वती, शोलापुर, स्वामी हंसप्रकाश जी, अध्यक्ष प्राचीन अवदूत मंडल, हरिद्वार, स्वामी गणेशानन्द गिरि अध्यक्ष देहली भारत साधु समाज

अनुशासन, सेवाभाव, सिद्धान्तों के प्रति समर्पित भावना ही स्वर्णिम युग लावेगी

-स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी

माऊन्ट आबू, 28 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन का आज ओमशान्ति भवन में शुभारम्भ हुआ। सर्वप्रथम संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने सभी उपस्थित दिव्य विभूतियों के सम्मुख परमपिता परमात्मा शिव का ध्वजारोहण किया। इसके पश्चात् सभागार में उपस्थित जनसमूह के मध्य दादी प्रकाशमणी जी सहित सभी उपस्थित महामण्डलेश्वरों एवं महन्तों ने दीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि परमार्थ निकेतन हरिद्वार के अध्यक्ष स्वामी धर्मानंद सरस्वती जी ने "विश्व शान्ति में धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं एवं वरिष्ठ व्यक्तियों का योगदान" विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भौतिक सुविधाओं से मानव का जीवन स्तर ऊँचा हुआ है लेकिन मानसिक तनाव भी इतना बढ़ा है कि वह शान्तिपूर्वक भोजन भी ग्रहण नहीं कर पाता। इस तनाव का कारण है मानव का विषयोन्मुख होना। अतः आज मानव को जागृत कर श्रेष्ठ कर्मों को उसके आचरण तथा व्यवहारिक जीवन में लाने की नितांत आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की गतिविधियों का वर्णन करते हुए आपने कहा कि यहां का अनुशासन सेवाभाव एवं सिद्धांतों के प्रति समर्पित भावनाएं ही स्वर्णिम युग लावेगी तथा आपकी उत्तरोत्तर वृद्धि करेगी और भारत तथा विश्व की सभी संस्थाओं का आपको सहयोग प्राप्त होगा। सम्मेलन की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणी जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आध्यात्मिक शाक्ति से ही कर्मों में श्रेष्ठता आएगी तथा श्रेष्ठ कर्मो से ही विश्व में शान्ति की स्थापना होगी। अतएव श्रेष्ठ आचरण के द्वारा स्वपरिवर्तन कर विश्व परिवर्तन के लिए आप सभी सहयोगी बनें। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल पुष्प समान जीवन बनाकर अपनी त्याग, तपस्या, सेवा, श्वांस व संकल्पों के योगदान से विश्व को पुनः सुख शान्तिमय बना सकते हैं। सम्मेलन के माननीय अतिथि स्वामी हरिनारायणानंद, महामंत्री भारत साधु समाज, देहली ने कहा कि आज विश्व विनाश के कगार पर है तो नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना की अति आवश्यकता है। आध्यात्मिक नियमों के पालन से ही जीवन श्रेष्ठ बनता है। मन में छिपा शैतान ही सर्व बुराइयों की जड़ है अतः चित्त शुद्धि परम आवश्यक है।

सम्मेलन के माननीय अतिथि स्वामी डॉ० श्याम सुन्दर दास शास्त्री जी, मंत्री, भारत साधु समाज हरिद्वार ने कहा कि आज का मानव धर्म से विचलित हो गया है, मानवता लोप हो गई है। अतएव आज मानव जीवन में परस्पर सद्भाव, बन्धुत्व की भावना, सहानुभुति तथा सहयोग की भावनाओं का प्रादुर्भाव करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता है। तभी विश्व को सुखी एवं शान्तिमय बनाया जा सकेगा।

सम्मेलन के प्रमुख वक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र, संस्था के मुख्य प्रवक्ता ने संबोधित करते हुए कहा कि विश्व में सुख शान्तिमय समाज की स्थापना के लिए कर्मों की श्रेष्ठता, विचारों की पवित्रता आवश्यक है। आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा मानव का विवेक जागृत होता है तथा सद्विवेक ही सत्कर्म की ओर प्रेरित करता है। इस प्रकार सत्कर्मों में संलग्न समाज द्वारा विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना हो सकेगी।

सम्मेलन की सफलता के लिए ज्योतिर्मठ बद्रिकाश्रम के ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगदगुरू शंकराचार्य स्वामी विष्णु देवानन्द सरस्वती जी ने प्रेषित अपने शुभकामना संदेश में कहा कि विश्व बंधुत्व के लिए शान्तियुक्त आध्यात्मिक व्यावहारिक अनुभव गम्य योजना बना रहे है। वह उचित हैं। आध्यात्मिक शक्ति द्वारा ही आपसी एकता एवं विश्व एकता संभव है।

कार्यक्रम का संचालन देहली के ब्रह्माकुमार बृजमोहन, संपादक प्युरिटी मासिक ने किया एवं भारत में ग्याना के हाईकमिश्नर भ्राता स्टीव नारायण ने धन्यवाद दिया।

ब्र. कु. दादी जानकी जी, ब्र. कु. दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र कु. दादी प्रकाशमणि जी, ब्र. कु दादी चन्द्रमणि जी के साथ महासम्मेलन मे पधारे स्वामी, महामण्डलेश्वर गण ज्ञान चर्चा करते हुए।

'राजयोग' अर्थात् "मेरा कुछ भी नहीं"

ब्र.कु. सूरज कुमार, मधुबन, आबू

राजयोग की गति बड़ी ही गुह्य है । दिनोंदिन अभ्यास के द्वारा ही इसकी गुह्यता को अनुभव किया जाता है । यद्यपि राजयोग निरन्तर अभ्यास का विषय है, तो भी इसमें सरलता का आधार इसकी सूक्ष्मताओं का जानना भी है । अभ्यास बिना ईश्वरीय प्रेम के सूना-सा प्रतीत होता है और ईश्वर से प्रेम उससे सम्बन्ध के आधार पर ही बढ़ता है । तो यहाँ हम योग की उस सुन्दर स्थिति की चर्चा करेंगे, जिसमें अभ्यास नहीं बल्कि अपने प्राणेश्वर परमपिता के प्यार में मग्न होने का अनुभव किया जाता है ।

जन्म लेते-लेते और प्रकृति से निरन्तर सम्बन्ध रखते हुए आत्मा प्रकृति के द्वारा प्रदत्त साधनों को अपना समझने लगती है । क्योंकि प्रकृति के साधन स्थूल होने के कारण उनमें स्थूल आकर्षण है । यह आकर्षण जब आत्मा को अधीन कर लेता है तो आत्मा इन साधनों को ही सर्वस्व मान बैठती है । उसका प्रकृति से इतना अपनापन बढ़ जाता है कि दुखदाई प्रतीत होते हुए भी आत्मा उससे मुक्त होना नहीं चाहती ।

इसी प्रकार विभिन्न सम्बन्धों में आते हुए दैहिक नातों में मनुष्यात्मा का 'अपनापन' जुड़ जाता है । यही 'अपनापन' मोह व आसक्तियों का कारण बनता है । इनमें दुख पाते हुए भी मनुष्यात्मा स्वयं को इनसे मुक्त नहीं कर पाती । वह इस स्मृति को बार-बार दोहराती है कि ये सब 'मेरे' है । यही मेरापन उसकी चिन्ताओं व परेशानियों का कारण बनता है । आज यद्यपि ये देह के नाते सम्पूर्ण स्वार्थ पर आधारित है तो भी मोहवश मनुष्य इस जाल को काट नहीं पाता और फिर शिकायत करता है कि इन नातों में आज स्नेह, विश्वास व सम्मान नहीं है ।

सर्वप्रथम आत्मा का 'मेरापन' अपने शरीर में है । दूसरा मेरापन उसे उन पदार्थों में है, जो उसे प्रकृति के द्वारा उपयोग के लिये मिले है । तीसरा मेरापन देह के सम्बन्धियों से है और चौथा मेरापन अपने कार्यों से व जिम्मेदारियों से अथवा सेवाओं से । इन चार प्रकार के मेरेपन में आत्मा निरन्तर उलझी हुई है ।

"मेरेपन का त्याग"

देह मेरी है, मुझे प्रकृति से मिली है—यह सत्य है । परन्तु कैसे सम्भव हो कि यह स्मृति रहे कि देह भी मेरी नहीं है । एक ओर तो हम इसे अपनी समझ कर इसकी सम्भाल करें और दूसरी ओर इससे मेरापन निकालकर आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाएँ—यह सन्तुलन कैसे हो?

हमें यह याद रहे कि ये देह हमें प्रकृति से मिला हुआ घर है । यह घर मुझे प्रकृति से किराये (Loan) पर मिला है । मुझे इसकी सम्भाल भी करनी है और क्यूँकि यह किराये पर है, इसलिए यह मेरा भी नहीं है । जब इस देह रूपी घर से 'मेरापन' निकले तब ही आत्मा इस देह की मालिक बने अर्थात् देह व कर्मेन्द्रियों को अपने अधीन करे । अन्यथा देह आत्मा की मालिक बन गई है अर्थात् देह ने आत्मा को अपने अधीन कर लिया है । तो हमें यह स्मृति रहे कि यह देह भी मेरी नहीं । इसका भाव देह के प्रति निराशा या उदासी का भाव नहीं, बल्कि अशरीरी-पन का अनुभव है ।

देह के पदार्थों से मेरे-पन का त्याग—

दैहिक पदार्थ जो मनुष्य ने मेहनत से कमाकर एकत्रित किये है उनमें मनुष्य का अपना-पन हो जाना स्वाभाविक-सा है । परन्तु योग-अभ्यासी को इनसे भी अपना-पन निकाल देना होगा । ठीक है, जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए वैभवों का इकट्ठा करना आवश्यक है, परंतु इकट्ठा करते समय उन्हें प्रभु-अर्पण करते चलो, तो इनके जाने से दुख नहीं होगा ।क्योंकि हमें याद रहे कि ये पदार्थ और वैभव नष्ट अवश्य ही होंगे । इनमें अपना-पन मनुष्य के मन को बोझिल व बुद्धि को अस्थिर करता है । इसलिए विनाशी वैभवों में विनाशी भाव व निमित्त भाव रहे तो आत्मा हल्की होकर उड़ती रहेगी ।

देह के सम्बन्धियों से 'मेरे-पन' का त्याग—

देह के सम्बन्ध एक योगी के लिए सबसे अधिक विघ्नकारी बनते है—यदि इनमें मेरा-पन है तो । यह मेरा-पन मन की गहराइयों तक जड़ें जमा चुका है । उनका दुख हमें दुखी करता है, उनका सुख हमें सुखी करता है । ये दैहिक 'मेरा-पन' योगी को त्याज्य है । यह 'मेरे-पन' का भाव हमारे सूक्ष्म हिसाब-किताब को जटिल बनाता है, बन्धनों को मजबूत करता है और योग को कठिन । अतः हमारे मन में अब यही भाव समाया हो कि ये इस विश्व ड्रॉमा में निमित्त सम्बन्ध है । ये ही सम्बन्ध अविनाशी नहीं है ।

कार्य में 'मेरे-पन' का त्याग–

जो कर्म मनुष्य करता है, धीरे-धीरे उससे होने वाली प्राप्तियाँ उसे कर्म के प्रति आसक्त करने लगती है और इ्यूटियाँ सेवा को 'मेरी सेवा' मानकर वह इस मेरे-पन के सूक्ष्म बन्धन में बन्धने लगता है । परंतु एक योगी अपने कार्य भी पूरी जिम्मेदारी से पूर्ण करता है और उनमें 'मेरे-पन' का भाव भी नहीं रखता । तो योग-मार्ग पर चलने वालों को इन चारों प्रकार के मैं-पन को महसूस करके इनसे परे निकल जाना चाहिए ।

"राजयोग अर्थात् मेरा बाबा"

राजयोग अर्थात् आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ना । परंतु आज आत्मा का सम्बन्ध इन चार चीजों से जुड़ गया है । इनसे आत्मा को निकालकर, परमात्मा से जोड़ना–यही योगी की सफलता का आधार है ।

सम्पूर्ण मेरा-पन एक परमात्मा में हो–

जैसे हमारा अपना-पन दैहिक सम्बन्धों में है, वैसा ही अत्यंत अपना-पन एक परमपिता (बाबा) में हो । यह अपना-पन दिनोंदिन बढ़ता चले, इसका सूक्ष्म नशा बढ़ता चले.... हम याद करें इन ईश्वरीय महावाक्यों को–

"बच्चे, तुमने मुझे भक्ति में कहा था कि हे भगवान जब आप इस धरा पर आओ, हमें अपना बना लेना । तो बच्चे, मैंने आकर तुम्हें अपना तो बना ही लिया, परंतु मै भी तो तुम्हारा हो गया ।"

तो विचार करें–"भगवान हमारा है ।" उसने हमें यह कहने का अधिकार दिया कि "तुम हमारे हो ।" संसार में यह कहने का अधिकार अन्य किसी को भी नहीं है । तो हम अन्तर्मुखी होकर बार-बार स्वयं को याद दिलायें–"भगवान हमारा है ।" संसार की सबसे बड़ी सत्ता हमारी है । और निशि-दिन बाबा के ये मधुर बोल कानों में गूँजते रहें–

"बच्चे, मैं तुम्हारा ही तो हूँ"

हमारा मन इस सत्यता को महीनता से स्वीकार करता चले कि 'भगवान हमारा है'–

और अब हम विचार करें, इस जग में यदि किसी का पिता, पुत्र या मित्र किसी देश का प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति हो तो उसकी मनोस्थिति कैसी होती है... वह व्यक्ति कितना निश्चिंत व निर्भय हो जाता है... उसे परेशानी नहीं होती बल्कि वह दूसरों को भी कहता है कि आप कभी भी चिंता नहीं करना, प्रधानमंत्री हमारा अपना ही आदमी है ।

और इस सत्य पर विचार करो–"भगवान हमारा अपना है ।" संसार की बिगड़ी को बनाने वाला "हमारा अपना है"... जिसके लिए प्रसिद्ध है कि उसकी भ्रकुटि तनते ही सातो सागर थर्राने लगते है–वह हमारा है... तो क्या कहीं भी हमें भय या चिंता करने की आवश्यकता है । बस उस **"अपने में"** सम्पूर्ण विश्वास हो और मन उस पर कुर्बान हो ।

परमात्मा हमारा सब-कुछ है–

वह हमारा बाप, शिक्षक, सद्गुरु, सखा, साजन, मित्र व बच्चा भी है । हमें किसी भी प्राप्ति के लिए अन्य कहीं झाँकने की जरूरत नहीं । बाप बनकर वह सर्व खजाने लेकर निशिदिन हमारे द्वार खटखटाता है, हम उससे सब-कुछ ले लें... शिक्षक बन उसने अपना सम्पूर्ण ज्ञान हमारे सामने रख दिया, हमें अन्य कहीं से, अन्य कुछ भी जानने की जरूरत नहीं... सद्गुरु बनकर उसने हमें सत्य राह दिखा दी, हम उस पर चलें, उसके आशीर्वाद का हाथ सदा ही हमारे सिर पर है । साजन बनकर वह प्रतिदिन सर्व कलाओं से हमारा श्रृंगार कर रहा है । हम श्रृंगार बिगाड़े नहीं... मित्र बनकर हर कदम पर हमें मदद कर रहा है, हम उसकी मदद लें... बालक बनकर हमारा मन बहला रहा है... हमारी थकान मिटा रहा है, हम उस पर समर्पित हों... इस प्रकार सर्व सम्बन्धों का रस लेकर, सर्व सम्बन्धों का प्यार लेकर अब वह हमारे साथ उपस्थित है, बस हमारा भी सम्पूर्ण प्यार उस पर समर्पित हो और यह स्मृति दृढ़ होती चले कि वही हमारा सब-कुछ है । अन्य सम्बन्धों में हमारा प्यार बँट न जाए ।

वही हमारा संसार है–

संसार में आकर्षण की दो ही वस्तुएँ होती है–एक व्यक्ति व दूसरा वैभव । तो सर्व सम्बन्धों का सुख भी हम एक परमात्मा से ही प्राप्त करते है । क्योंकि सांसारिक सम्बन्धों में कटुता है, सदा का सुख नहीं और वैभव भी आज क्षणिक सुख ही देते है । परंतु शिवबाबा से हमें सदाकाल का सुख प्राप्त होता है, जो भी वैभव हमें चाहिए । बल्कि इतने वैभव जो युग-युग हमारे साथ चले–वे सभी हमें उस एक से ही प्राप्त होते है । तो हम इन वैभवों व व्यक्तियों से बुद्धि निकालकर उस एक परमपिता को ही अपना संसार बना लें ।

बस ये संसार तो उसी ही दिन हमारे लिए समाप्त हो गया जिस दिन से हमने स्वीकार किया कि "तू एक ही मेरा संसार है ।"

यही अपनापन प्यार बढ़ाता है–

कई योग-अभ्यासी यह प्रश्न सदा ही करते है कि शिवबाबा से प्यार कैसे बढ़े? तो स्पष्ट है कि जितना-जितना अपनापन उसमें

(शेष पृष्ठ २६ पर)

समय को सफल करो

बी.के. रमेश, गामदेवी, बंबई

भक्त लोग कहते हैं प्रभु की लीला अपरंपार है । हम बच्चे कहते हैं परमात्मा हम बच्चों के तन-मन एवं धन को सफल करने के अनेक तरीके बताते है । और यह सब उपाय या तरीके हम सब अपना लें तो यह संगमयुग का जीवन सहज रीति से सफल हो जाय । हम कहते है सेवा की लीला अपरंपार है ।

अब तक हम परमात्मा द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय को रुद्र-ज्ञान-यज्ञ कहते थे जिसमें इस पुरानी सृष्टि की अनेक चीज़ें स्वाहा हो जायेंगी – भस्मीभूत हो जायेंगी । इस यज्ञ की पावन ज्वाला सबको इस तरह पावन करेंगी । अब इस रुद्र-ज्ञान-यज्ञ को अविनाशी ईश्वरीय बैंक के रूप में प्रसिद्ध करने की श्रीमत हम बच्चों को मिली है । इस अविनाशी बैंक में जमा करने से सब आत्मायें अपना तन-मन, धन या मन, वचन, कर्म सफल कर सकेंगे । इस बैंक का कारोबार अन्य बैंकों की तरह धन के माध्यम द्वारा नहीं होगा । अन्य बैंकों का इकाई (Unit of measurement) है धन और इस ईश्वरीय बैंक की ईकाई (Unit of measurement) या मापदंड 'समय' है ।

इस मापदंड में परमपिता परमात्मा ने क्यों परिवर्तन किया । शिव परमात्मा का अर्थशास्त्र बहुत ही सुंदर और दिव्य है । आज के अर्थशास्त्र (Economics) में शास्त्र है परंतु अर्थ नहीं है । जीवन का अर्थ सही रूप में आज की धन रूपी संपत्ति नहीं बता सकता । आज के विश्व में मंहगाई बढ़ती है और रुपये का मूल्य गिरता है और चीजों की कीमत बढ़ती है । एक मकान की कीमत आज से 20 साल पहिले 20,000 रु. होगी तो उसी मकान की कीमत शायद 1,60,000 रु भी हो सकती है । इसका मतलब यह नहीं कि मकान का मूल्य 8 गुना ज्यादा बढ़ा । हवा की कीमत नहीं इसका अर्थ यह नहीं उसका मूल्य नहीं । ऐसे ही अनेक चीज़ें है जिनका मूल्यांकन धन द्वारा नहीं किया जा सकता । माँ की ममता या त्याग का मूल्यांकन कैसे हो सके ? प्रेम, आनंद, सत्य आदि दैवीगुणों का मूल्यांकन धन द्वारा कैसे सही रूप में हो सकेगा ? धन द्वारा सत्यता, दिव्यता या विश्वबंधुत्व की भावना को कैसे खरीदा जाए ? असंभव है ।

इसी तरह धन के बारे में एक अन्य समस्या है । आज की सृष्टि में गरीब या अमीर – यह भेद है । धन से ही भाग्य बन सकता है तो सिर्फ धनवान ही नई सृष्टि में आ सकेंगे । परंतु शिवबाबा कहते है गरीब का एक रुपया धनवान के अनेक रुपयों से ज्यादा भाग्य बना सकता है । दूसरी बात है एक बढ़ई (Carpenter) भारत में बंबई जैसे शहर में एक दिन का 80 से 100 रु. कमा सकता है और अमेरिका में शायद उसे 50 या 60 डॉलर एक दिन के मिले अर्थात् भारत के हिसाब से उसे 650 से 750 रु. एक दिन के मिलें । अर्थात् समान कार्य द्वारा उपार्जित धन की मात्रा (Quantity) में फर्क है । धन को उसी तरह राष्ट्र भेद या राष्ट्र की हद भी सीमित करती है । अर्थात् एक देश का धन अन्य देश में काम में ना लगे, या सरकार धन का अवमूल्यांकन (Devaluation) या निर्मूलन (Demontisation) कर दे (जैसे भारत सरकार ने 1000 रु. के नोट को कैंसल कर दिया इस कारण उसका मूल्य एक रात में खत्म हो गया) । धन ना हो तो भी अनेक सरकारें आज की दुनिया में ज्यादा नोट छापकर अपनी प्रजा को देती हैं जिसको (Deficit financing) डेफिसिट फाइनेंसिंग (घाटे की अर्थव्यवस्था) कहते हैं ।

धन की यह सब कमी का यह अर्थ नहीं कि धन फालतू चीज़ है । शिवबाबा धन को माया कहकर वर्ज्य है ऐसा नहीं कहते । परंतु उसको योग्य स्थान इस ईश्वरीय सेवा में देते है और इसी कारण सबको कहते है अपने तन-मन-धन को सफल करो । साथ-साथ धन की इन हद्दों (Limitations) को ध्यान में रखकर इस ईश्वरीय बैंक में अविनाशी कमाई जमा करने के लिए, समय के मापदंड को स्वीकार करते हैं ।

समय सबके लिए समान है । हरेक के पास दिन के 24 घंटे या मास के 30 दिन या वर्ष के 365 दिन हैं । और उसी कारण सबको समान अवसर मिलता है । यह ईश्वरीय समाजवाद समझना बहुत जरूरी है । बाबा सबको समान ज्ञान देते हैं और आगे बढ़ने के अवसर (Opportunity) भी सबको समान देते हैं । भाग्य या

प्राप्ति में अंतर हमारे पुरुषार्थ पर है । बाबा के लिए सब बच्चे समान हैं । इसी कारण जहां तक हो सके वहां तक समानता रखाते हैं । धन के माध्यम द्वारा यह समानता नहीं हो सकेगी । परंतु समय के द्वारा हो सकेगी । सब देशों में, राज्यों में समय समान है । किसी के पास कम या ज्यादा समय नहीं हो सकेगा ना ही समय रूपी नोट कोई सरकार ज्यादा छाप सकेगी । या समय का कर्जा कोई नहीं ले सकेगा या उसका दीवाला (Insolvency) कोई नहीं निकाल सकेगा । हरेक को अपने पांव पर खड़ा रहना पड़ेगा । धनाढ्य दादा लेखराज जी विश्व के प्रथम महाराजा श्री नारायण बन सके तो धन की दृष्टि से निर्धन ॐ राधे, मातेश्वरी बनकर अपने पुरुषार्थ द्वारा विश्व की प्रथम विश्व महारानी श्री लक्ष्मी बन सकी । शिवबाबा का यह आदर्श सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय समाजवाद का प्रतीक है - समय देना, दिव्यगुण धारण करना और संपूर्ण बनना ।

समय का सदुपयोग करना और समय द्वारा सहयोग देना यह है लक्ष्य । धन का सहयोग तो सहज है । आज के करोड़पति एक सेकंड में लाखों का चेक देकर अपना छोटा या बड़ा भाग्य बना सकेगा । परंतु उसको कहो कि वह रोज़ 3-4 घंटे समय निकालकर ईश्वरीय सेवा अर्थ या अपने परिवर्तन करने के लिये दे । जितना ज्यादा धनवान उतना शायद समय के क्षेत्र में कभी-कभी गरीब होगा । राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान के लिये समय की ज़रूरत है । भक्तिमार्ग में अनेक धनवान व्यक्ति जपी अर्थात् जप करने वाले को पैसे से रखकर उनसे मृत्युंजय आदि अनेक प्रकार के जप कराते हैं । परंतु राजयोग में परमात्मा की याद ऐसे खरीदी नहीं जा सकेगी । दिव्यगुणों की धारणा के लिए स्वयं का पुरुषार्थ चाहिए । अर्थात् आज की सृष्टि का अर्थशास्त्र धन का अयथार्थ उपयोग (Use) के कारण बिगड़ा हुआ है । उसे ठीक करने के लिए शिवबाबा ने इस ईश्वरीय बैंक का मापदंड 'समय' रखा है । आज के विश्व की अनेक बिगड़ी हुई चीज़ों को फिर से बनाने के लिए ईश्वरीय युक्ति भी कितनी अच्छी है ।

समय किसी का इंतज़ार नहीं करता । समय के अनेक रूप है । आने वाले कल के विश्व को प्रत्यक्ष करना है । और यह कार्य धन नहीं कर पाता । सिर्फ धन, मानव को सुखी नहीं बनाता । अगर ऐसा हो तो विश्व के अंदर धनवान ही सुखी होते । अमेरिका या अन्य धनवान देशों में स्वर्ग होता । किंतु स्वर्ग की स्थापना में सबका सहयोग चाहिये यह बात सिद्ध करने के लिए विभिन्न वर्गों की सेवा का लक्ष्य शिवबाबा ने दिया । इस लक्ष्यपूर्ति के लिए सबका पवित्र पुरुषार्थ चले उसी कारण समय का सहयोग-इस ईश्वरीय बैंक में जमा होगा । समय शब्द भी कितना युक्तियुक्त है उसमें यम भी है तो सम अर्थात् समानता भी है, यश (स) अर्थात् सार्थकता एवं सफलता भी है । शिवबाबा ने कहा है नियम बहुत बलवान है-नियम पर चलने वालों पर नियम अर्थात् यम नहीं आयेगा । उसी तरह समय को सफल करने वालों के पास यम नहीं आयेगा । और काल जितना-जितना गुजरता जायेगा उतना-उतना हम गरीब होते जाते हैं । एक-एक सेकंड में हम अरबों की कमाई कर सकते हैं । इस सच्ची कमाई के प्रति सबका लक्ष्य हो इसी कारण इस ईश्वरीय बैंक की योजना भी अभी हुई है ।

विश्व में प्रचलित अन्य बैंकों में मापदंड है खून (Blood) नेत्र या गुर्दा (Kidney) परंतु नेत्र या गुर्दा-मूत्रपिंड सबके पास सिर्फ 2 है या खून भी एक समय 1 या 2 बोतल ही शायद दे सके । किताबों की बैंक में भी पढ़नेवाला विद्यार्थी ही दे सके । बोतल बैंक में भी बोतल जिसके पास होगी वह दे सकेगा अर्थात् ऐसे विभिन्न प्रकार की बैंकों को शारीरिक या कुदरती हदें (Limitations) हैं परंतु समय के क्षेत्र में इतनी दृढ़ हद्द (Strict limitations) नहीं है । बीमार खून का दान कैसे दे सकेगा? किंतु बीमार भी खटिया पर सोते-सोते शुभ-संकल्पों का दान दे सकता है अर्थात् बीमारी के समय भी अपना समय सफल कर सकता है । कई देशों में नेत्रदान के रूप में हज़ारों आंखें मिलती हैं किंतु उनके सदुपयोग के लिए अनेक बातों की ज़रूरत है । गुर्दा-मूत्रपिंड भी शरीर के जुड़वे भाई (Twin brother) या बहन (Sister) या अन्य शारीरिक भाई-बहन का ही स्वीकार करते हैं । बाकी तो अनेक आंखें या गुर्दे निष्फल जाते हैं । किंतु समय का दान या सहयोग निष्फल नहीं जाता क्योंकि समय तो सिर्फ साधन है और उस द्वारा उपयोग करने वाला साधना करेगा । विविध लक्ष्यों वाले पुरुषार्थ या सेवा रूपी साधना का साधन है समय । समय-साधन भी सच्चा धन भी है, समय की सावधानी भी सबको देनी है तो सबको कहना भी है **'समय को सफल करो'** यह है नई प्रकार की सेवा का मूल मंत्र । □

प्राकृतिक आपदाओं के निवारण की पांच युक्तियां

आज यदि चारों ओर नजर दौड़ायें तो देखने में आता है कि सारे विश्व में "अकाल-मृत्यु" का मौसम आ गया है। कहीं युद्ध हो रहे हैं, कहीं बाढ़ के प्रकोप से लोग डूब रहे हैं, तो कहीं सूखे से मानव प्यासा मर रहा है। कहीं आग नुकसान कर रही है, तो कहीं तूफान आ रहे हैं। इस वर्ष तो हद हो गई है।भारत का दो तिहाई भूखण्ड सूखे की चपेट में आ गया है, तो पूर्वी भारत बाढ़ से दुखी है। हमारी सरकार तथा अन्य देशों की सरकारें योजनायें तो बहुत बनाती हैं ताकि देश सुखी और वैभवशाली हो जावे और देशवासियों का जीवन स्तर ऊंचा उठ जाये। परन्तु प्राकृतिक आपदाओं के कारण उनकी सुख-समृद्धि की सभी योजनाओं पर पानी फिर जाता है। कहावत भी है–"भाव, मृत्यु व पानी, साहस देव न जानी।" अर्थात् मृत्यु कब होगी, पानी कब बरसेगा और किस समय मनुष्य के मन में क्या भाव उठेगा, इसको महज ही नहीं जाना जा सकता है।

प्राकृतिक आपदाओं का कारण क्या है ?

कोई बात मनुष्य नहीं जानता है तो वह कहता है कि भगवान् जानते हैं। अब भगवान् स्वयं कहते हैं कि यह प्राकृतिक आपदायें तो रहेंगी, क्योंकि उनका जो मूल कारण है उसकी निवृत्ति तो हो नहीं रही है। कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता, इसलिए इन प्राकृतिक आपदाओं का कोई-न-कोई कारण अवश्य है। यह तो सहज ही समझ में आने वाली बात है कि दुःखों का कारण बुरे कर्म ही हैं। बुरे कर्म उन कर्मों को कहते हैं जो कि विकारों के वशीभूत होकर किये गए हों। अतः सिद्ध हुआ कि आपदाओं का मूल कारण विकार हैं। तभी तुलसीदास जी ने भी कहा है–

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस करइ, सोई फल चाखा।"

तो मनुष्य के अपने किए हुए विकार-युक्त कर्म ही प्राकृतिक आपदाओं के रूप में उसके सामने पेश आते हैं। आज मनुष्य के मस्तिष्क में विकार तो इतने समा गए हैं कि जाग्रत अवस्था में तो वह विकार के वशीभूत होता ही है, परन्तु उसे स्वपन भी विकारी ही बातों के आते हैं।

आज सभी मनुष्य विकारों के वश हैं

आज संसार की चाल उलटी हो गई है। जो देश लड़ाई में होशियार हैं, वे अपनी सीमाओं को पार करके दूसरे देश की सीमाओं पर आक्रमण करते और जबरदस्ती उन पर अधिकार कर लेते हैं। अन्य सभी देश ऐसे आक्रमणकारी देश को ही आदर और मान देते हैं और उसकी गणना 'बड़े देशों' में करते हैं। दूर की क्या कहें, आज हमारे देश की सरकार भी किसी बात को तभी मानती है जब जन-समूह कानून को तोड़कर **हिंसा** पर उतर आता है। इसी प्रकार, आज मनुष्य का झूठ बोलना, कम तोलना, चालाकी करना उसका स्वभाव-सा हो गया है और जो इन सब बातों में होशियार होता है उसको सभी मनुष्य 'समझदार' मानते हैं। 'रंगी को नारंगी कहें, दूध का बना खोया, चलती को गाड़ी कहें, देख कबीरा रोया' वाली बात वर्तमान समाज पर ठीक घटती है।

आज सभी मनुष्य विकारों के वश होकर देह-अभिमान में आकर कर्म करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप असफलता ही हाथ लगती है, क्योंकि, बुरे का अन्त बुरा ही होता है। आज देश की सरकार नये भारत का नव-निर्माण करने के लिए योजनायें बनाती है परन्तु भ्रष्टाचार का बोलबाला होने के कारण योजनाएं सफल नहीं होतीं। देश का बहुत धन बरबाद हो रहा है। इसी प्रकार व्यापारी वर्ग भी लोभ के नशे में आकर असली माल में मिलावट करके देशवासियों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। **क्रोध व अहंकार के कारण** भाषा की समस्या अभी तक नहीं सुलझ पाई है और आये दिन किसी-न-किसी बात को लेकर **दंगे-फसाद** होते ही रहते हैं। **देहाभिमान** तथा **काम** विकार के कारण फैशन परस्ती बढ़ रही है और जन-संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है, जो कि आयोजनकर्ताओं की सभी योजनाओं को प्रभाव हीन कर रही है और नई-नई समस्याएँ पैदा कर रही है। दस साल पहले जो समस्याएँ देश के सामने थीं वह आज भी कम या अधिक मात्रा में मौजूद हैं। **इसी कारण, हम कहते हैं** कि भले ही **मनुष्य योजनाएँ** बनाये, परन्तु **जब तक वह पवित्र बनने की योजना नहीं बनाता तब तक निर्विकारी नहीं बनता तब तक प्राकृतिक आपदाओं और गृह-युद्धों (Civilwars) द्वारा उसको क्लेश पहुँचता ही रहेगा,** क्योंकि आपदाएँ हमारे विकार-युक्त कर्मों का परिणाम हैं।

भूल से ही शूल लगता है

जब मनुष्यात्मा पवित्र होती है तब कोई भी तत्त्व दुःख देने

वाला नहीं होता। कहते भी हैं कि आत्मा अपना ही मित्र और अपना ही शत्रू है। मनुष्य ने चाल ही ऐसी चली है जिससे वह बेहाल हो गया है; उसने **भूल** ही ऐसी की है कि उसको प्राकृतिक आपदाओं द्वारा **शूल** चुभता रहता है। पहले इसी देश में चक्रवर्ती राजा राज्य किया करते थे। चक्रवर्ती से तात्पर्य यह है कि उनका जल, थल, नभ, चर-अचर सब पर एकछत्र राज्य था। कोई भी उनके राज्य में दुःखी नहीं था। श्री लक्ष्मी-श्री नारायण और श्री सीता-श्रीराम के राज्य का तो आज तक गायन चला आता है। उन्होंने मन के विकारों पर विजय प्राप्त की हुई थी। तभी तो कहते हैं कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

धर्म को कर्म के साथ जोड़ने की आवश्यकता

अतः यदि हम प्राकृतिक आपदाओं पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं तो पहले मन के विकारों पर विजय प्राप्त करनी होगी। **आज स्वरूप-विस्मृति और विकारों के कारण ही प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य को नचा रही हैं वरना सेवक की क्या मजाल कि स्वामी को दुःख दे सके। दुःख का मूल कारण तो यही है कि कर्म के साथ धर्म जुड़ा हुआ नहीं है। आज कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो संसार में न पाई जाती हो। वैज्ञानिकों ने व्यवहार रूप में सब चीजें बना ली हैं, लेकिन धर्म (पवित्रता की धारणा) न होने के कारण सुख नहीं है।** आज भले ही विज्ञान ने काफी उन्नति कर ली है और वैज्ञानिक लोग प्रकृति को वश में करने के लिए दिन-रात एक कर रहे हैं और जनता भी सुख के लिए करोड़ों रुपया खर्च करती है, परन्तु आज किसी को वास्तविक सुख-शान्ति प्राप्त नहीं है। हालत जहाँ की तहाँ ही है।

हिसाब ज्यों-का-त्यों कुम्बा डूबा क्यों?

यहाँ पर एक दृष्टान्त याद आता है। एक बार, एक मौलवी जी को एक नदी पार करनी थी। उनके साथ दो बच्चे और पत्नी भी थी। मौलवी साहिब ने अपनी लाठी लेकर और नदी के बीच में जाकर पानी की गहराई को नापा और फिर अन्य दो-तीन स्थानों पर भी पानी की गहराई को नापा। फिर कुल जोड़ (Grand total) निकालकर औसत निकाली। उसके बाद कहने लगा कि डर की कोई बात नहीं है, औसत (average) ठीक है, कोई डूबेगा नहीं। सो, वह सबको लेकर बेखटके जल में उतरने लगा। अभी तक तो पानी कमर तक था, परन्तु थोड़ा आगे बढ़ने पर गले तक पानी चढ़ आया और बच्चे डूब गए। दूसरे किनारे पर जाकर मौलवी साहिब ने जब यह देखा कि बच्चे तो शायद डूब गए हैं तो उन्हें हैरानी हुई कि हिसाब में कहीं भूल तो नहीं रह गई। उन्होंने फिर से उसको दुहराया तो पाया कि हिसाब तो ठीक है। तब तो मौलवी साहब बड़े असमंजस में पड़ गए और उनके मुख से निकल पड़ा कि 'हिसाब ज्यों-का-त्यों, कुम्बा डूबा क्यों?'

इसी प्रकार, आज बड़े-बड़े योजनाधिकारी भी योजनाएँ बनाते रहते हैं कि इस साल इतने एकड़ भूमि में अनाज बोयेंगे, अमुक विधि से खेती करेंगे, एक एकड़ भूमि में इतने क्विन्टल अनाज की पैदावार होगी, देश की जनसंख्या तब तक अमुक संख्या तक पहुँच चुकेगी, हरएक नागरिक के हिस्से में इतने किलो तक अनाज आयेगा, पहले से तो हरएक व्यक्ति के अनाज की मात्रा में वृद्धि होगी ही। परन्तु प्राकृतिक आपदायें उनकी सारी कागजी योजनाओं को गुड़-गोबर कर देती हैं। कहीं अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ जाता है तो कहीं अतिवृष्टि के कारण बाढ़ आ जाती है। कहीं बाँध का पानी अपनी मर्यादा को तोड़कर बाहर फूट पड़ता है तो कहीं टिड्डी दल हरी-भरी खड़ी फसल को क्षण-भर में चाटकर चौपट कर देता है और योजना बनाने वाले सोचते ही रह जाते हैं **कि हिसाब ज्यों-का-त्यों, सुख-समृद्धि की प्लैन (योजना) डूबी क्यों?** हम पहले ही इसका कारण बता आये हैं कि इन सभी आपदाओं का कारण यह है कि मनुष्य के कर्म, धर्म से युक्त नहीं हैं क्योंकि धर्म ही तारने वाला है और अधर्म डुबोने वाला है। धर्म न होने के कारण प्राकृतिक आपदायें आती ही हैं।

बहुत-से लोग कहते हैं कि धर्म तो आज पहले से भी ज्यादा है, आये दिन मन्दिर, मस्जिद इत्यादि की संख्या बढ़ती जा रही है, छापा-खाना (प्रेस) होने से शास्त्रों की प्रतियाँ भी करोड़ों की संख्या में छपती हैं, साक्षरता का प्रसार होने के कारण लोग उनको पढ़ते भी हैं, शान्ति स्थापना के लिए यज्ञ भी खूब किए जाते हैं, परन्तु परिणाम यह देखने में आ रहा है कि जितना ही ऐसा धर्म बढ़ता जा रहा है उतनी ही प्राकृतिक आपदाएं भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसा क्यों हो रहा है? वस्तुतः आज लोग यह भी नहीं समझते हैं कि धर्म का अर्थ क्या है, धर्म किस चिड़िया का नाम है?

यहाँ पर एक मिसाल याद आती है। एक बूढ़ा आदमी अपने पड़ोसियों के साथ बातचीत कर रहा था। बात करते-करते उसने कहा कि हमने अपने जीवन में बहुत कुछ किया, परन्तु किसी भी परिस्थिति में अपने धर्म को नहीं छोड़ा। अपने जीवन में बहुत-कुछ खाया-पिया मौज उड़ाई परन्तु जहाँ कहीं भी हम गए, हमने धर्म को पूरी तरह निभाया। इस पर पड़ोसियों ने कहा जरा अपनी बात को स्पष्ट करिये। बूढ़ा बोला—"देखो, किसी ने हमको बहुत तंग किया तो हमने उस पर क्रोध बेशक किया और जीवन में

शराब कई बार पी, कबाब भी खाया, परन्तु रोज उठकर रामधुन जरूर गायी। अगर कभी उसके लिए समय नहीं मिला तो हमने अपने मन में राम को सामने लाकर माथा ही टेक दिया और मन-ही-मन उसको तिलक देकर अपने को भी तिलक दिया, तो इस प्रकार मैं कह रहा था कि मैंने धर्म को नहीं छोड़ा।" यह सुनकर उनमें जो समझदार आदमी थे वे हँस पड़े, क्योंकि वास्तव में तो तिलक देने को धर्म नहीं कहा जाता। धर्म कोई गंगा के किनारे जाकर माला फेरने व मन्दिर में जाकर पूजा करने की वस्तु नहीं है, बल्कि धर्म तो धारण करने की वस्तु है। अगर किसी मनुष्य ने पवित्रता धारण नहीं की, अपने जीवन को दैवी गुणों से नहीं सजाया तो उसे धर्मात्मा नहीं कहा जा सकता। जिसके मन में विकार हैं वह चाहे सारा दिन पूजा क्यों न करता हो, उसे पापात्मा ही कहा जायेगा, धर्मात्मा नहीं। जहाँ पाप है वहाँ ताप अवश्य है, जहां भोग है वहाँ रोग व शोक भी जरूर होते हैं। जहाँ धर्म है वहाँ ही उपकार है। इसलिए कहते भी हैं—"राम राजा राम प्रजा, राम साहूकार है, जिये नगरी बसे दाता धर्म का उपकार है।"

प्राकृतिक आपदाओं का निवारण

अब प्रश्न उठता है कि इन प्राकृतिक आपदाओं का निवारण कैसे हो। प्रकृति पाँच तत्वों की बनी है, यदि इनसे बचना चाहते हैं तो पाँच युक्तियाँ याद रखिये।

जल से बचना चाहते हैं तो जल का अर्थ पानी भी है और 'जल' विकारों से जलने को भी कह सकते हैं। यदि आप इन विकारों को जला देंगे तो जल तत्व आप के लिए कभी भी आपदाओं का रूप धारण नहीं करेगा। वायु से तात्पर्य हवा भी है और अगर कोई चीज गुम हो जाती है तो कहते हैं कि "हवा हो गई"। आप यदि विकारों को हवा कर देंगे तो हवा आपको कभी भी दुःखी न करेगी। अग्नि अर्थात् पुराने संस्कारों को अथवा पूर्व जन्म के विकर्मों को योग अग्नि में भस्म कर देंगे तो आपको अग्नि से कभी कोई कष्ट न होगा। धरती के बारे में कहते हैं कि 'धरती पर पड़िये परन्तु धर्म न छोड़िये'। अगर आप दैवी धर्म को धारण करेंगे तो भूचाल आदि से अर्थात् धरती की आपदाओं से बच जायेंगे। आकाश अर्थात् आ +काश। इसका भाव यह है कि माया से डरो मत, बल्कि उसको ललकारो, माया को चुनौती दो कि माया, आ। काश ! मैं तुमको मजा चखा सकता।

वास्तविक दान-पुण्य द्वारा प्राकृतिक आपदाओं का निवारण

लोग आपदाओं को टालने के लिये दान-पुण्य करते हैं। जब सूर्य को ग्रहण लगता है तो ब्राह्मण लोग कहते हैं कि दान-पुण्य कर लीजिये ताकि इसका बुरा प्रभाव आपके ऊपर न पड़े। इससे सिद्ध है कि पुण्य-कर्म करने से आपदायें शान्त हो जाती हैं। अब मनुष्यात्माओं पर जो माया का ग्रहण लगा हुआ है, उसको टालने के लिये विकारों का दान देना ही आवश्यक है और सबसे बड़ा पुण्य है। यदि कोई व्यक्ति किसी प्यासे आदमी को पानी पिलाता है तो कहते हैं कि उसने पुण्य कर्म किया। कई लोग पशुओं के लिए पानी पीने की जगह बनवाते हैं। वे समझते हैं कि पशु बेजबान हैं, वे पानी पियेंगे तो हमें पुण्य-लाभ होगा। परन्तु जन्म-जन्मान्तर से आत्मा की परमात्मा से जो मिलने की प्यास रही है, उसको तृप्त करना ही सबसे बड़ा पुण्य है। ज्ञान और योग द्वारा सारी सृष्टि को ही सुखी किया जा सकता है। अतः इसी का दान देना सबसे बड़ा पुण्य है।

लोग प्रायः भूचाल, बाढ़, आग लगने और बहुत अधिक वर्षा को प्राकृतिक आपदा कहते हैं परन्तु आज तो कोई-न-कोई आपदा आती ही रहती है। कभी अति सर्दी तो कभी अति गर्मी। कहीं कोई महामारी फैल जाती है, तो कहीं हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं, कहीं खानों (mines)में भी दुर्घटनायें घटित हो जाया करती हैं। जिन तत्वों से हमारा शरीर बना है और जिनका सारे वायुमण्डल पर प्रभाव है वह तत्त्व ही बिगड़े हुए हैं। यह हमारे विकारयुक्त कर्मों के सूक्ष्म प्रभाव से बिगड़े हुए हैं। इनको ठीक भी सूक्ष्म शक्ति से किया जा सकता है। अगर हम भोगी से योगी बन जायें तो निश्चय मानिये कि ये तत्व भी सुखदायी हो जायेंगे।

गीता में भगवान् के महावाक्य हैं कि परधर्म ही दुःख देने वाला है। जबसे मनुष्य ने अपने स्वधर्म को छोड़ दिया है और प्रकृति के परधर्म को अपनाया है तब से प्रकृति ने भी अपने धर्म को छोड़ दिया है। मनुष्य ही सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। यदि वह अपने धर्म पर आचरण करे और आत्मस्वरूप में स्थित होकर कर्म करे तो प्रकृति भी अपने नियम पर चलेगी ही। परन्तु आज मनुष्यात्मायें देहभान में रहकर कर्म करती हैं। अतः प्रकृति के तत्व भी उथल-पुथल मचा रहे हैं।

धर्मराज परमात्मा द्वारा मनुष्यों को सावधानी

सारांश यह है कि प्राकृतिक आपदाओं के रूप में हम अपने ही किये हुए कुकर्मों का फल भोग रहे हैं। यदि कोई इससे छुटकारा पाना चाहता है तो उसे योगी बनना होगा। यदि कोई योगी बनना चाहता है तो उसे विकारों के भोग का भोग लगाना होगा अर्थात्

उन्हें विदा देनी होगी अथवा उन्हें शिव पर बलि चढ़ानी होगी।

अब धर्मराज परमात्मा मनुष्य मात्र को सावधानी देते हुए कहते हैं कि मनुष्यों द्वारा किये-गये विकारयुक्त कर्मों के कारण अब महाविनाश का बिगुल बजने ही वाला है। यह जो आपदायें आये दिन आती ही रहती हैं यह तो मानो पूर्व-भूमिका (रिहर्सल, rehearsal) मात्र हैं। भारी प्राकृतिक आपदायें तो आने वाले समय में आयेंगी। उनमें सम्पूर्ण सृष्टि की आहुति पड़ जाने वाली है। मैंने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के रूप में जो अविनाशी रुद्र ज्ञान-यज्ञ स्थापित किया है उसमें सहज गीता-ज्ञानामृत का पान कर पवित्र बनिये ताकि महाविनाश के समय प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव आप पर न पड़े !!

"सुखमय संसार मनाने वालों को"

(ब्र. कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

भले किसी को दिखे ने दिखे, मुकुट में कहीं लगे न लगे,
कीमत उसकी किसी मन में अंके न अंके
पिछवाड़े की खुदाई के नीचे ही सही–
मेरी भी इक ईंट ज़रूर लगा देना।
शुभभावनाओं को सँजो के खड़ी हूँ–
सुखमय संसार मनाने वालों को ;
मेरे इस सहयोग की इत्तिला देना॥
तस्वीर भले खिंचे न खिंचे,
वाह वाही भले मिले न मिले ;
गुप्त अति साधारण ढंग से ही सही,
मेरी भी इक ईंट जरूर लगा देना।
शुभकामनाएँ पिरोए लिए खड़ी हूँ–
सुखमय संसार मनाने वालों को ;
मेरे इस सहयोग की इत्तला देना॥
रूप बाहरी भले जचे न जचे,
स्थूल आकर्षण भले लगे न लगे,
भभकों से परे चुपचाप ही सही–
मेरी भी इक ईंट जरूर खपा देना।
पवित्रता से सजा के लाई हूँ–
सुखमय संसार मनाने वालों को ;
मेरे इस सहयोग की इत्तला देना॥
फिलहाल सुखमय भले लगे न लगे,
वर्तमान भले फले न फले,
पर "कल" सुखमय बनाने को–
सहयोग सर्व का जुटाने को–
समभाव और आन्तरिक स्नेह का दीप जला देना।
सुखमय संसार मनाने वालों को ;
असल सुख की भाषा बता देना॥
इनाम भले मिले न मिले,
विश्व भले चुने न चुने,
"अजैण्डा" की लिस्ट के लास्ट में ही सही–
हार्दिक सरलता-निर्मलता चिपका देना।
ईश्वरीय योजना वाले सुखमय संसार के पहले,
यह सुखद सैम्पल ज़रूर दिखला देना।
सुखमय संसार मनाने वालों को ;
है जरूरी सर्व को सुखमय बना देना॥

कोटा : *'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में वरिष्ठ पत्रकार श्री आनन्द लक्ष्मण खांडेकर सम्बोधित करते हुए।*

भ्रष्टाचार कैसे मिटे ?

आजकल समाचार-पत्रों में भ्रष्टाचार की खूब चर्चा है। पिछले कई महीनों से बोफोर के समाचारों ने तो बोर ही कर दिया है। बोफोर्स मामला तो इतना तूल पकड़ता जा रहा है इसका कहीं अंत ही नज़र नहीं आता। संसद में भी इसकी काफी चर्चा रही। विपक्ष ने सरकारी-पक्ष पर खूब आरोप लगाए। यहां तक कि भारत के प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी को भी अपने और अपने परिवार के बारे में सफाई पेश करनी पड़ी। इसी प्रकार कुछ समय पूर्व अंतुले जी के कारनामे समाचार-पत्रों का विषय था। कई अनियमितताओं के कारण उसे मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा। कभी आंध्र के मुख्यमंत्री पर आरोप लगाए जाते है तो कभी संचार मंत्री अर्जुन सिंह जी का नाम भ्रष्ट तरीके अपनाने में लिया जाता है। मतलब आजकल ऐसे समाचारों का बाजार गर्म है। यह भ्रष्टाचार की विकट समस्या है। इसका हल क्या है? परंतु किसी समस्या को हल करने से पूर्व पहले उसे जानना जरूरी है।

भ्रष्टाचार के कई प्रकार है। आजकल लोग प्रायः रिश्वत लेने वाले अथवा अपने अधिकारों का गलत प्रयोग करके धन कमाने वाले व्यक्ति को ही भ्रष्टाचारी कहते है। इस कारण समाचार-पत्रों में तो थोड़े-से प्रमुख ही व्यक्तियों के नाम इस प्रसंग में छपते है। परंतु वास्तव में यह भ्रष्टाचार का अत्यंत सीमित अर्थ है। खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट करने वाले क्या कम भ्रष्टाचारी है? भ्रष्टाचार के तो अनेक प्रकार है। वर्तमान समय तो घर-घर में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। तभी तो मंदिरों में जाकर लोग कहते है कि, "मै कामी, कपटी, दास और नीच हूं।" इसका अर्थ यही तो निकलता है कि "भ्रष्टाचारी" हूं।

भ्रष्टाचार का मूल कारण

सरसरी दृष्टि से देखा जाए तो गलत तरीके से धन कमाने का मूल कारण भी लोभ है। परंतु वास्तव में लोभ के पीछें भी मोह, आसक्ति और देह-अभिमान है बाल-बच्चों अथवा स्त्री और परिवार में मोह के कारण अथवा वस्तुओं में आसक्ति के कारण, अथवा अपने अभिमान के कारण, अपनी पोजीशन (Position) को बनाये रखने के विचार से ही मनुष्य प्रायः रिश्वत लेता है अथवा गलत तरीकों से धन कमाता है और कामनाओं के वशीभूत होकर ही तो मनुष्य भ्रष्टाचार करता है।

स्पष्ट है कि देखने में तो भ्रष्टाचार एक है, लेकिन इसके पीछे कितने ही विकार है। इसलिए जब तक इन विकारों का अंत न किया जाएगा तब तक भ्रष्टाचार समाप्त नहीं होगा। बिजली से आग लग रही हो तो मुख्य स्विच (Main Switch) बन्द करना आवश्यक है। यदि हम पानी डालते है पर स्विच बंद नहीं करते तो आग बढ़ती जाएगी। इस प्रकार देह-अभिमान को समाप्त किए बिना लोभादि विकारों की आग भी धधकती रहेगी और भ्रष्टाचार भी बढ़ता रहेगा क्योंकि यही देह-अभिमान ही भ्रष्टाचार का मेन स्विच (Main Switch) है। भ्रष्टाचार की उत्पत्ति लोभादि विकारों से और विकारों की उत्पत्ति होती ही देह-अभिमान से है। इसलिए यदि मनुष्य को याद रहे कि – "मै तो परम-पवित्र परमात्मा की संतान, अविनाशी आत्मा हूं, मेरा आचरण तो श्रेष्ठ होना चाहिए" तो भ्रष्टाचार के स्थान पर श्रेष्ठाचार का दौर शुरू हो सकता है। लेकिन, आज अगर यह सहज युक्ति सरकार अथवा जनता को बताई जाती है तो वह कहती है कि, "छोड़ो इन धार्मिक बातों को। आत्मा-वात्मा क्या है? इन बातों से पेट थोड़े ही भरता है?" आप किसी को भी देह-अभिमान छोड़ आत्म-निश्चय करने की बात सुनाएँ तो वह तुरंत कहेगा, "भूखे भजन न होइ गोपाला।" वह कहेगा, हमारे घर में भूख है और आप आत्मा-निश्चय की कह रहे है। किसी तरह से धन की कमी दूर हो सकती हो तो वह बात बताओ।

भ्रष्टाचार का कारण कमी है परंतु कमी का कारण क्या है?

अब देखिए, भ्रष्टाचार तभी होता है जब किसी के घर में या देश में किसी-न-किसी प्रकार की कमी होती है। अगर किसी के पास अखुट धन हो तो फिर उसको रिश्वत लेने की क्या परवाह (चिन्ता) होगी? अखुट धन वाला व्यक्ति तो 'बेपरवाह बादशाह' (चिन्ता-रहित सम्राट्) है। उदाहरण के तौर पर जब किसी व्यक्ति को सीमेन्ट की कमी होती है तो उसे प्राप्त करने के लिए वह रिश्वत देता है या चोर बाजार से ले आता है। सीमेन्ट बेचने वाले के पास धन की कमी है तभी तो वह रिश्वत लेता है। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य राशन (Ration) की दुकान खोलना चाहता है तो उसे लाइसेन्स (Licence) की आवश्यकता होती है। वह सोचता है कि चलो पहले कुछ रिश्वत देने में भले ही कुछ खर्च हो जाए परंतु बाद में तो काफी पैसा बटोर लूंगा। सिद्ध है कि लाइसेन्स (Licence) देने वाले जो व्यक्ति रिश्वत लेते है उनके पास भी कमी है और जो रिश्वत देता है उसके पास भी धन की कमी है।

अब सवाल उठता है कि कमी क्यों होती है? कमी तब होती है जब मनुष्य के कर्म खोटे होते है या जब पुण्य खुट जाते है। जब पुण्य

छुट जाते हैं तो वस्तुएँ भी छुट जाती हैं । इस बारे में एक प्रसिद्ध पद इस प्रकार है – "सकल पदारथ हैं जग माहीं, भाग्यहीन नर पावत नाहीं ।" एक मनुष्य ने अपने मित्र को कहा कि यदि समय पर ऑक्सीजन (Oxygen) मिल जाती तो मेरी माताजी बच जातीं । परंतु बात यह है कि जब किसी के भाग्य ख़त्म हो जाते हैं अथवा पुण्य समाप्त हो जाते हैं तो उसका कोई कुछ नहीं कर सकता । इसका यह अर्थ नहीं कि पुरुषार्थ नहीं करना चाहिए । बल्कि यह भाव है कि प्रारब्ध भी पुरुषार्थ के रास्ते में बाधक या सहायक बन जाया करती है । सिद्ध हुआ कि कमी को पूरा करने के लिए कर्म को सुधारने की आवश्यकता है अथवा कमी भी कर्म सुधारने से पूरी होगी । अगर कर्म में कमी है तो भाग्य में अवश्य कमी होगी । और जब तक कमी रहेगी तब तक भ्रष्टाचार ज़रूर होगा । और भ्रष्टाचार होगा तो कमी रहेगी । दोनों बातें ओत-प्रोत हैं । दोनों बातें तभी ठीक होंगी जब ज्ञान और योग होगा ।

ज्ञान और योग के बिना भ्रष्टाचार का अंत नहीं हो सकता

कमी मिटाने के लिए ज्ञान और योग ज़रूरी है । जैसे पेट्रोल के बिना मोटर नहीं चल सकती और कोयले के बिना रेलगाड़ी नहीं चल सकती और खाने के बिना मनुष्य का जीवन नहीं चल सकता वैसे ही ज्ञान और योग के बिना मनुष्य के कर्म भी नहीं चल सकते । इसलिए उक्ति प्रसिद्ध है कि ज्ञान के बिना मनुष्य की गति नहीं होती अर्थात् इनके बिना मनुष्य का जीवन सुखपूर्वक और शान्तिपूर्वक नहीं चल सकता । तो फिर भी बात यहां आकर ठहरती है कि ज्ञान और योग के बिना सुधार नहीं है ।

जैसे कई बार डॉक्टर कहते हैं कि "अगर यह दवाई ले आओ तो रोगी बच जाएगा वरना रोगी की स्थिति निराशाजनक (Hopeless) है ।" यदि कोई व्यक्ति हम से पूछे कि, "क्या भ्रष्टाचार के सुधार की आशा है तो हम भी कहेंगे कि, "है भी और नहीं भी है ।" हम भी यह कहेंगे कि आज दुनिया की दशा बहुत निराशाजनक है । आज सृष्टि रूपी रोगी अपने प्राणों से नहीं जी रहा बल्कि कृत्रिम (Artificial) प्राणों से इसका श्वास चल रहा है । इसलिए परमात्मा, जो ही भ्रष्टाचार रूप रोग का निवारण करने वाले वैद्य हैं वह कहते हैं कि, "ज्ञान और योग के बिना इस रोगी सृष्टि का बचना असम्भव है । धर्म-ग्लानि और कर्म-ग्लानि इतनी हो गई है कि स्थिति संकटमय है (The case is critical) । दुनिया आखिरी श्वास ले रही है । इसके बचाव का केवल एक ही तरीका है । वह है ज्ञान और योग रूपी औषधि का सेवन ।

रोग नहीं मर रहा, रोगी मर रहा है !

प्रसिद्ध बात है कि जब किसी रोगी का अन्तिम समय आता है तो रोगी मुँह बन्द कर लेता है और दवाई नहीं लेता । यही हालत आज भ्रष्टाचार से पीड़ित सृष्टि की है । वह भी ज्ञान और योग रूपी औषधि नहीं लेती । अतः स्थिति को देखते हुए यही कहना पड़ेगा कि मृत्यु निकट है । परम वैद्य परमात्मा कहते हैं कि मेरे पास ज्ञान-रूपी संजीवनी बूटी है । मै इस सृष्टि की काया पलट सकता हूं, मेरे पास अमृत है । जिससे इस सृष्टि का बचाव हो सकता है । मेरे बारे में लोग कहते भी हैं कि परमात्मा 'मुर्दे को जिंदा' करने वाला है । लेकिन मेरी यह औषधि लेते नहीं तो यह जिंदा' कैसे होंगे? ज्ञान-रूपी औषधि के बिना तो गति नहीं है ।

अब आप देखिए कि नेता लोग भ्रष्टाचार के रोग को तो जानते नहीं हैं और न ही इसकी औषधि जानते हैं परंतु चले हैं इसका इलाज करने । आप ही सोचिए कि इसका परिणाम क्या होगा ! कहते हैं कि एक होमियोपैथिक डॉक्टर था । उसने कुछ इश्तिहार छपाकर बँटवाए । उनमें यह सूचना थी कि अमुक-अमुक रोग को ठीक करने का उसे विशेष ज्ञान है । वह इश्तिहार पढ़कर एक माता उसके पास गई । डॉक्टर ने उसे कुछ औषधि खाने को दी । बस उस माता ने ज्यों ही दवा खाई तो वह मर गई । यानी रोग तो नहीं मरा परंतु रोगी मर गया । इसी प्रकार आज भी नेताओं द्वारा जो इलाज हो रहा है, भ्रष्टाचार तो मर नहीं रहा, लोग ही भ्रष्टाचार और अन्य संकटों से मरते जा रहे हैं ।

वे इलाज क्या कर रहे हैं, संसार के विनाश की तैयारी कर रहे हैं । जब कि नेता लोग स्वयं ही भ्रष्टाचारी हैं तो वह भ्रष्टाचार को दूर कैसे कर सकते हैं? आज तो "यथा राजा (अधिकारीगण) तथा प्रजा" सभी पतित हैं । पतित को पतित भला कैसे पावन कर सकता है? □

मोगा में आध्यात्मिक कार्यक्रम में एस.डी.एम. भ्राता अमर जीत सिंह जी को बी.के. संजीवन साहित्य दे रही हैं।

रायचूर : 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन दृश्य। भाग ले रहे है ब्र.कु. निर्मला, भ्राता मुहम्मद उमर, भ्राता सुरेश रेड्डी, बी.के. शुकन्तला श्रीमती मैत्रा पाटिल तथा बी.के. उमा तथा सलोचना।

परतवाड़ा : अचलपुर गीता पाठशाला के उद्घाटन समारोह पर [illegible] जी, पुलिस इंसपेक्टर (अचलपुर) तथा ब्र.कु. लता जी दीप प्रज्वलित करते हुए।

संकेश्वर : 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर बोलते हुए ब्र.कु. महादेव जी।

शाहबाद (कर्नाटक) शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में ब्र.कु. रंजना शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए। साथ में एन.पी. गुप्ता, डि. जनरल मैनेजर, ए.सी.सी. डॉ. अरुणा बैठे है।

जोधपुर सेवाकेंद्र के भवन का उद्घाटन राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के कर कमलों द्वारा हुआ। चित्र में दादी जी, मोहिनी जी, ब्र.कु. निर्मला जी व अन्य बहनें।

बेलगाम में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन दृश्य जिसमें विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया।

बीड सेवाकेंद्र पर द्वितीय वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर जिलाधिकारी श्राता निवास पाटील जी दीप प्रज्वलित करते हुए, साथ में ब्र.कु. सोमप्रभा व लता खड़ी है।

इलाहाबाद- मेजा क्षेत्र मे एक मेले मे आयोजित प्रदर्शनी मे बी.डी. ओ. साहब अपने विचार लिख रहे है। साथ मे बी.के. बहन-भाई खड़े है।

डीसा सेवाकेंद्र द्वारा राधनपुर शहर मे 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' नामक प्रोग्राम मे टी.डी.ओ. श्राता पटेल जी अपना व्यक्तव्य दे रहे है।

सोलन मे उर्दू रिसर्च ट्रेनिंग सेंटर मे प्रवचन करती हुई ब्र.कु. शुक्ला जी, साथ में प्रिंसीपल श्राता जमाल साहिब जी तथा ब्र.कु. सुषमा बैठी है।

अमृतसर : 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी के उपकुलपति अपने विचार व्यक्त करते हुए।

शुजालपुर में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन दृश्य।

कासगंज : *'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन पर भ्राता राजेंद्र कुमार बंसल अपने विचार व्यक्त करते हुए।*

बिलासपुर : *'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भ्राता रामनारायण शुक्ल, प्राचार्य विप्र कॉलेज।*

म्हापसा (गोवा) *में प्रदर्शन देखने के बाद अपने विचार प्रगट करते हुए पुलिस उप-अधीक्षक भ्राता गुरुदास जुवारकर, बाजू में तरुण भारत के रिपोर्टर भ्राता नारायण ठाकुर तथा ब.कु. बहनें दिखाई दे रही है।*

पाली *में गणमान्य व्यक्ति दादी जी का स्वागत करते हुए।*

शक्तिनगर *दिल्ली के नव-निर्मित संग्रहालय का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणी जी, दादी हृदयमोहिनी जी, मोहिनी जी तथा अन्य ब.कु. बहन-भाई दिखाई दे रहे है।*

गुन्टकल *सेवाकेंद्र द्वारा 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' नामक प्रोग्राम के उद्घाटन समारोह पर मंच पर मुख्य अतिथिगण दिखाई दे रहे है।*

राँची सदर राँची के सब-डिविजनल आफिसर एवं सर्किल आफिसर भ्राता एच.एन सिंह आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के लिए पधारे। ब्र.कु. निर्मला जी चित्रों की व्याख्या दे रही है।

उज्जैन में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में (बाएं से) शंकर वर्मा, ब्र.कु. जयंती बहिन वरिष्ट पत्रकार भ्राता अवंतीलाल जैन विराजमान है।

रायगढ़-'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर ब्र.कु. गीता प्रवचन करते हुए।

सांभर सेवाकेंद्र की ओर से एक समारोह में अपने विचार देती हुई मीनाक्षी बहन और साथ में वहाँ के मुख्य अतिथि उप-जिलाधीश तथा ब्र.कु. सुषमा जी बैठे है।

फिल्लौर में एक आध्यात्मिक प्रोग्राम के अवसर पर पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज के डी.आई.जी. गुरिन्दर सिंह के साथ बी.के. बहन-भाई खड़े है।

जालन्धर रोटरी क्लब की मासिक बैठक में ब्रह्माकुमारी राज बहन "राजयोग का महत्व" समझा रही है। मंच पर क्लब के पदाधिकारी दिखाई दे रहे है।

सहारनपुर : पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भ्राता ब्रिजमोहन जी।

परमात्मा शिव नारी शक्ति द्वारा स्वर्ग का द्वार खोलते हैं?

ब्रह्माकुमार बसंत मोदी, दुर्ग

कैसी अजीब विडम्बना है कि नारी प्रधान देश भारत में जहां नारी को सबसे अधिक सम्मान की नज़र से देखा जाता था और आज भी कहीं हद तक देखा जाता है, उसी नारी जगत को समय समय पर अनुकूल के साथ ही प्रतिकूल टिप्पणियों व परीक्षाओं का सामना भी करना पड़ा है, पति के साथ बलि होना पड़ा है, अबला भी कहलाई है, तो दुर्गा भी कहलाई है। वर्ष में दो बार धूमधाम से मां जगदम्बे का जो गायन पूजन चलता है वह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। एक साधारण नारी जगदम्बे, सरस्वती व भविष्य में सतयुग की लक्ष्मी कैसे बनती है इसका भी वर्तमान समय प्रत्यक्ष प्रमाण है। स्वर्ग का द्वार खोलने वाली नारी को सन्यासियों ने नरक का द्वार कहकर अपमानित किया है। जिस देश में देवताओं की अपेक्षा देवियों की पूजा ज्यादा होती आई है तो इससे ही सिद्ध है कि नारी पुरुष की अपेक्षा पावन पूज्य रही है, शक्तिशाली रही है और पुरुष ने नारी से शक्ति प्राप्त की है। यह शक्ति कोई शारीरिक नहीं वरन आत्मा से प्राप्त की है। विभिन्न शक्तियों से औरों को सजाने वाली शक्तियों ने (नारियों ने) यह शक्ति किससे प्राप्त की थी यह अब तक किवदंतियों, कथाओं के आवरण में प्रायः लोप ही रहा।

तो जब इस सृष्टि के अन्त में अर्थात् कलियुग के अन्तिम समय में जबकि पापाचार, अत्याचार, व्याभिचार चरम सीमा पर रहता है, सभी प्राणी त्राहि त्राहि करते मौत मांगते जीते रहते हैं, किसी तरह मानव घिसट घिसट कर जीने पर मजबूर हो जाता है तो सृष्टि रचयिता परमात्मा का दिल पसीज उठता है। अपनी रची हुई रचना को इतना दुख क्लेश उठाते उससे देखा नहीं जाता तब वह सर्वशक्तिवान परमपिता सर्वआत्माओं को पावन बनाने, दुखी से सदा काल का सुखी बनाने, नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनाने इस भारत भूमि पर दिव्य अवतरण की तैयारी कर लेते है और ६३ जन्मों के २५०० वर्षों में सबसे अधिक भक्ति करने वाले एक भक्त के बूढ़े तन में अवतरित होकर दिव्य गीता का सच्चा ज्ञान सुनाकर इस जगत के मनुष्य आत्माओं का झूठा अहंकार, विकार, मोह छुड़ाकर उन्हें सच्चा ज्ञान अर्जित कराकर 'अर्जुन' बना देते है, और शिवशक्ति पांडव सेना की एक ताकतवर सेना तैयार करके ५ विकारों वाले दशशीश रावण का संहार करके इस पाप की लंका को समाप्त कर देते है और एक सुखी स्वराज्य सतयुग की स्थापना करते है जिसे स्वर्ग कहते है। अज्ञानता की वजह से मनुष्य कहता आया है कि स्वर्गलोक ऊपर है जहां से परियां आती है और पाताल लोक इस धरती के नीचे है, जबकि वास्तव में मनुष्यों के रहने का स्थान अर्थात रंगमंच यह धरती ही होती है, न नीचे न ऊपर देहधारी रह सकते है। ऊपर बहुत ऊपर सूर्य, चांद सितारों से भी ऊपर, प्रकृति के पाँच तत्वों के पार अगर कोई रहता है तो वह है परमपिता निराकार परमात्मा जो अति सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु है और अपने बच्चों अर्थात् सर्वआत्माओं को साथ लेकर रहता है। उसके इस निवास स्थान को ही ब्रह्मलोक या परमधाम कहा जाता है। फिर उन आत्माओं की पवित्रता की परसेन्टेज के हिसाब से नम्बरवार इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने के लिए आना पड़ता है और इस प्रकार कल्प का ५००० वर्षों का चक्र फिरता रहता है और आगे भी फिरता रहेगा क्योंकि यह सृष्टि का रचा हुआ चक्र आदि अविनाशी है। इसका नाश कभी नहीं होता। परमात्मा स्वयं इस चक्र के बन्धन में बँधा हुआ है और अंतिम कयामत के समय उसे भी अपना रोल अदा करने इस धरती पर आना है होता है। चूंकि वह भक्तों की कामना पूरी करने, भक्ति का फल 'ज्ञान' देने स्वयं आता है इसलिए मुस्लिम सम्प्रदाय वाले उसे 'खुदा' भी कहते है अर्थात् जो खुद आए।

परमात्मा के निराकार प्रकाशस्वरूप अस्तित्व की तो हर धर्म, जाति, सम्प्रदाय, धर्मव्यवस्थापक ने स्वीकारा है। विभिन्न नाम, रूप देकर उस एक ईश्वर की ही अब तक भक्ति करते आए और काफी लम्बे समय तक भक्ति करते करते, जनसंख्या बढ़ते बढ़ते उनमें विखंडन, मतभेद होने वाली घटनाएं भी घटती चली गईं और एक से अनेक शाखाएं आपस में उलझ गई, गुत्थम गुत्थी हो गई और स्वकल्याण व स्वलक्ष्य को भूलकर परमात्मा को भी बिसारकर स्वयं को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने के फेर में हिंसक बन गईं। इसका ज्वलंत उदाहरण आज विभिन्न जाति, धर्मों, देशों की लड़ाई हमारे सामने है और दुनिया का किस तेज़ी से विनाश हो रहा है। बची खुची दुनिया भी महाविनाश के अंतिम दौर में काल के गाल में समा

जाएगी तब यह धरती पापों से मुक्त हो जाएगी। सभी आत्माएं धर्मराज पिता के सामने अपना हिसाब किताब चुकतु करके मुक्तिधाम में जाकर विश्राम करेंगी। प्रकृति के पांचों तत्व भी पावन बन जाएंगे और तब अस भारत भूमि पर सिर्फ सतोप्रधान पावन आत्माएं ही जन्म लेंगी फिर यह धरा कलियुग नहीं सतयुग कहलाएगी और नए सिरे से ५००० वर्षों का चक्र फिर घूमना शुरू होगा।

तो इस नए सृष्टि की रचना में परमात्मा की ही सारी शक्ति, प्रेरणा व युक्ति लगी होती है, लेकिन निराकार परमात्मा को कार्य कराने शरीर तो चाहिए न, सो वह परमात्मा मानव तन का सहारा ले अलौकिक सन्तानों को पैदा भी करते है जो शक्तियाँ अर्थात ब्रह्माकुमारी एवं ब्रह्माकुमार कहलाते है, अर्थात ये ही वह वानर सेना है जो निराकार राम को रावण पर विजय दिलाने में सहयोगी होते है और इस प्रकार स्वयंसिद्ध है कि नारी स्वर्ग का द्वार है नरक का नहीं। दुनिया का वर्तमान चल रहा समय ही नरक है जिसे इसी समय ही गुप्त रूप से पुरुषार्थ करके नारियां स्वर्ग में बदल रही है। स्वर्ग को लाने में मेहनत करनी पड़ती है और नरक तो स्वयं चला आता है। अतः नारी से जन्म लेकर नारी को नरक का द्वार कहने वाले, परमात्मा को घट-घट में व्याप्त कहकर भक्तों की भगवान से दूर रखने वाले मनुष्य निश्चय ही सजा के पात्र है और अंत में धर्मराज के सामने उनका भी हिसाब-किताब होना है। यह परमपिता शिव भगवानुवाच है। □

राशि और पुरूषार्थ

ब्रह्माकुमार देवदत्त लगवाल, भावनगर (गुजरात)

मेष :– बना मेखला पवित्रता की, दिव्यता का ताज पहनकर।
आँधी-तूफाँ जो आए, तोफह मान सहनकर॥
छिने दोनों ताज तेरे, बना पूज्य से पुजारी है।
फिर से 'सिरताज' बनने की मिली 'श्रीमत' प्यारी है॥

वृष :– 'वृषभ' बने आदि-पिता, लक्ष्य विश्व नया बनाने का।
है आवाहन मानव को फिर से देव-पद पाने का॥
अभय और विजयी सदा 'शेष' पर तेरी शैया है।
दुखी और बेचैन, क्यों अब बन्धन में भटकी नैय्या है?

मिथुन :– छोड़ मैथुन अब पावन बनने की है पुष्प-बेला।
समय की कर पहचान जग छोड़ तुझे चलना अकेला॥
न चला-कटार अब नारी-नारायणी बनने आई है।
करती महासंहार विकारों का, महाकालेश्वर से लौ लगाई है॥

कर्क :– त्याग कर कुकर्म का सत्य कर्म का समय आया है।
आत्मा ने जन्मों का खोया प्यार फिर से पाया है॥
कुर्बानी कर विकारों की, सबको स्वर्ग की दिखा राह।
भटकती आत्माओं को सच्चे सद्गुरू से मिला॥

कन्या :– कन्याओं को दिया अमृत-कलश, विश्व को बाँट रही।
पी सकते देव ही इसलिए देव और दैत्यों को छाँट रही॥
जो भी असहाय, वह कुल-तारक बन आई है।
विश्व नव-निर्माण की उसने दुन्दुभी बजाई है॥

सिंह :– सिंह-वाहिनी, वरदायिनी देवी बनी सरस्वती, जगदम्बा आज।
अलौकिक करती पथ का, सजा कर ज्ञान-योग के साज॥
बन तू भी सियार से "नरसिंह" विषयों का खम्बा फाड़कर।
सुना जग को सन्देश "शिव" का, निर्भयता से दहाड़कर॥

तुला :– न्याय तुला से ले निर्णय यदि स्वर्गीय-सुख तुझे पाना है।
इसी 'संगम' पर कल्प की प्रालब्ध बनाना है॥
तुलना कर दैवी जीवन से, "श्रीमत" के लिए हठ ले ठान।
स्वीकार कर दिव्यता को, न बन गाफ़िल, छोड़ माया-अभियान॥

वृश्चिक :– न चला काम कटार यदि सच्चा सुख पाना है।
इसी पावनता से अनेक जन्मों का भाग्य बनाना है॥
समय कल्याणकारी जब हर बात में कल्याण है।
बनाले भाग्य अपना, मिटने वाला यह जहान है॥

धनु :– छोड़ लालसा कञ्चन की, ज्ञान धन का व्यापार कर।
तन-मन समर्पण कर अपने जीवन का उद्धार कर॥
कौड़ी के बदले हीरे-मोती पाने का समय आया।
आज का त्यागी ही पायेगा कल को कञ्चन काया॥

मकर :– छोड़ मक्कारी अब सादगी का जीवन अपना ले।
अपकारी पर उपकार कर सबकी श्रेष्ठ दुआ ले॥
मुर्कर कर जीवन शेष ईश्वरीय काम में लगाने का।
समय है जन-जन में अब जागृति लाने का॥

कुंभ :– ज्ञान कुंभ के अमृत-बिन्दु सबके कानों में टपकाओ।
सांसारिकता में फंसे हुओं को हिला-हिला कर जगाओ॥
मिट्टी का तन मिट्टी मान आत्म स्थिति में स्थित हो जाओ॥
न मिलेगा फिर यह वक्त, सबको यही राज समझाओ॥

मीन :– ज्ञान जल में डुबकी लगाकर भी आए यदि विकार की बदबू।
ऐसी आत्मा न हो सकेगी कभी 'शिव' के रूबरू।
बिन वारि मीन ज्यों, तड़प रही ऐसे दुनिया सारी।
पावन दृष्टि से आओ आज हर लें, आत्माओं की थकान सारी॥

विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया: कितनी साधारण !

ब्र.कु. शुकंतला कनोडिया, चंडीगढ़

'जमाना बदल गया है' इसका अर्थ यह है कि इस सृष्टि में उपस्थित प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति बदल गये हैं। जिसको दूसरे शब्दों में हम विश्व परिवर्तन कह सकते हैं। व्यक्ति या वस्तु के आंशिक और स्वाभाविक परिवर्तन की प्रक्रिया हम सदियों से देखते आ रहे हैं। हम सभी जानते हैं, जैसे-जैसे समय बीतता जाता है वस्तु के रूप, रंग, गुण, कर्म, स्वभाव में भी धीरे-धीरे परिवर्तन आ जाता है। यह परिवर्तन प्राकृतिक है। इसमें मनुष्य के कोई पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि यदि मनुष्य वस्तुओं के धीमी गति से आने वाले परिवर्तन की इस क्रिया पर अंकुश लगाना चाहे तो भी नहीं लगा सकता। क्योंकि यह प्रकृति का अटल नियम है। हाँ एक समय ऐसा आता है जब मनुष्य उस वस्तु की परिवर्तन क्रिया में हस्तक्षेप करता है और अपने पुरुषार्थ से उस वस्तु को फिर से उसकी मूल अवस्था में लाकर उसके रूप, रंग, गुण, कर्म स्वभाव को इच्छानुसार परिवर्तित का सकता है। इस संसार में सोना, लोहा, प्लास्टिक कागज इत्यादि प्रकृति कृत वस्तुओं पर यही परिवर्तन क्रिया लागू होती है। लेकिन इस क्रिया में जो महत्त्वपूर्ण तथ्य है जिस पर हम चर्चा करेंगे वह यह कि यदि हमें किसी भी वस्तु में आमूलचूल परिवर्तन लाना है तो उस वस्तु को किसी भी नये स्वरूप में ढालने से पूर्व वर्तमान समय के उस वस्तु के रूप, गुण, कर्म को पूर्ण रीति समाप्त करके उसके वास्तविक स्वरूप में लाना होगा। उसके बाद ही हम उस वस्तु में मन इच्छित परिवर्तन कर सकते हैं। स्वाभाविक परिवर्तन और मनुष्य के हस्तक्षेप और परिवर्तन में यही अन्तर है कि स्वाभाविक परिवर्तन की क्रिया अति धीमी है और उत्तरोत्तर वह वस्तु पतन की ओर अग्रसर होती है। परन्तु मनुष्य के हस्तक्षेप से वह वस्तु तीव्र वेग से अपने मूल स्वभाव में लौट आती है। इसके बाद इसे सतोप्रधान स्वरूप में रूपान्तरित करना अति सहज होता है।

अब हम देखेंगे कि सम्पूर्ण परिवर्तन की साधारण सी यह क्रिया विश्व के सम्पूर्ण परिवर्तन पर भी कैसे लागू होती है !इस सृष्टि चक्र में प्रकृति (जड़) और पुरुष (चेतन, आत्मा) दोनों का अविनाशी खेल चलता रहता है। दोनों सत्ताएँ है तो अविनाशी पर परिवर्तनशील है। चेतन होने के कारण आत्मा का प्रभुत्व है। और इसलिए आत्मा की प्रत्येक क्रिया से प्रकृति प्रभावित होती है। यानि प्रकृति पुरुष की सहचरी है। तो प्रकृति कृत वस्तुओं का परिवर्तन तो आत्मा कर लेती है परन्तु जब मनुष्य आत्मा ही प्राकृत परिवर्तन की धीरे-धीरे होने वाली प्रक्रिया द्वारा अपना मूल स्वभाव, स्वरूप, स्वकर्म, स्वगुण खो बैठे तो फिर उसके सम्पूर्ण परिवर्तन के लिए हस्तक्षेप कौन करे !! इसके लिए एक तीसरी सत्ता सृष्टि के रचयिता परमात्मा को हस्तक्षेप करना पड़ता है। परिवर्तन की इस महत्त्वपूर्ण क्रिया से हमारे सामने यह तथ्य आता है कि कोई भी व्यक्ति या वस्तु में आमूल-चूल परिवर्तन किसी अन्य सीनियर की सहायता बिना नहीं लाया जा सकता और जब मनुष्य,एक चेतन प्राणी स्वयं सम्पूर्ण परिवर्तित नहीं होगा तब तक प्राकृत विश्व को सम्पूर्ण परिवर्तन करने के उसके लाखों प्रयत्न व्यर्थ है, धन, समय और शक्ति की बरबादी है। इससे सिद्ध है कि विश्व परिवर्तन करने के लिए वस्तुओं को परिवर्तन करने का पुरुषार्थ या तरीका ही गलत है। अगर 100% समय, धन और शक्ति व्यक्ति के स्व-परिवर्तन पर लगाया जाता तो यह विश्व अब तक पूर्ण परिवर्तित हो गया होता। परन्तु हम ऊपर बता आये है कि मनुष्य आत्मा के सम्पूर्ण परिवर्तन के लिए एक तीसरी सत्ता परमपिता परमात्मा के सहयोग की आवश्यकता होती है। परमात्मा भी सृष्टि को सम्पूर्ण परिवर्तन करने के लिए यही साधारण क्रिया अपनाते हैं। जड़ और चेतन दोनों के ही तमोप्रधानता का यह वर्तमान समय दोनों में सम्पूर्ण परिवर्तन करने का अति उपयुक्त समय है। जिसको हम संगमयुग कहते है। क्योंकि इस समय ही प्रकृति और आत्मा के अन्तिम और आदि स्वरूप का संगम होता है।

परमात्मा की विश्व-परिवर्तन की इस प्रक्रिया का सबसे पहला कदम है – हम मनुष्यात्माओं को अपनी वास्तविकता की पहचान देना और वास्तविक अवस्था तक पहुंचना। यही वास्तविक स्थिति ही अन्तिम स्वरूप और आदि स्वरूप के मध्य एक सेतु है। अपनी वास्तविक स्थिति में स्थित हो जाने पर ही हम सतोप्रधान स्वरूप को प्राप्त कर सकते है। वर्तमान समय विश्व-परिवर्तन, परमपिता परमात्मा शिव ने जो हम मनुष्यतात्माओं की वास्तविकता का परिचय दिया है जिसमें हमें वापिस लौटना है अथवा यों कहें कि उसको प्राप्त करना है वह इस प्रकार है–

आत्मिक स्वरूप – हम वास्तव में न मनुष्य हैं न देवता !हम तो शरीर से भिन्न एक चेतन सत्ता आत्मा हैं। शरीर तो प्रकृति-कृत है परन्तु शरीर को चलाने वाली वास्तव में मैं आत्मा हूँ।

आत्मिक गुण – आज मनुष्य में अनेक आसुरी अवगुण आ गये है-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, झूठ, छल, कपट आदि। इनके स्थान पर स्वयं में दिव्य गुणों जैसे – मधुरता, स्नेह, पवित्रता, नम्रता, हर्षितमुखता को धारण करने के लिए अपने मूल गुणों को अनुभव करना होगा व उनमें स्थित होना होगा। वे मूल गुण है – पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति।

आत्मिक सम्बन्ध – आज सम्बन्धों में विकृति आ जाने के कारण सतोप्रधान सुखदायी सम्बन्ध न रह कर तमोप्रधान दुःखदायी बन्धन बन गये हैं।अतः अब हम एक पिता की सन्तान है। आपस में हम भाई-भाई हैं हमारा आपस में और कोई सम्बन्ध है ही नहीं। इसी वास्तविक सम्बन्ध में टिकने से हमें श्रेष्ठ सम्बन्धों की प्राप्ति होगी।

सम्पूर्ण पवित्रता – आत्मा स्वयं पवित्र स्वरूप है अर्थात् अपने आदि स्वरूप में वह सम्पूर्ण पवित्र है। इसके अतिरिक्त यदि कोई फैक्ट्री किसी भी वस्तु का अनावश्यक या निम्न स्तर का उत्पादन कर रही हो तो वह उत्पादन कम भी नहीं बल्कि सम्पूर्ण बन्द कर दियां जाता है। ताकि उसकी उत्पादन प्रणाली में उत्पन्न त्रुटियों को दूर किया जा सके। इसी प्रकार ब्रह्मचर्य से एक तो अनावश्यक उत्पादन समाप्त हो जाता है और दूसरा भावी परिवर्तित विश्व की स्थापना और वृद्धि ब्रह्मचर्य की संचित अमोघ शक्ति से होती है।

इन सब के अतिरिक्त सृष्टि चक्र के इस अन्तिम समय में ईश्वरीय योजना के अनुसार सृष्टि का महाविनाश विश्व परिवर्तन के इस विशाल कार्य में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिसके बाद ही सतोप्रधान आत्माएँ अपने सतोप्रधान स्वरूप, गुण, कर्म,स्वभाव से युक्त होकर सतो प्रधान प्रकृति के साथ अपना फिर से जीवन चक्र आरम्भ करेंगी। इसीलिए उस समय को सतयुग और वहाँ रहने वालों को देवता कहा जाता है। प्रकृति भी अपने सुखदायी स्वरूप में लौट आती है और दासी बन सेवा में उपस्थित रहती है। वर्तमान समय ईश्वरीय निर्देशानुसार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से यह विश्व परिवर्तन की प्रकिया तीव्र वेग से परन्तु गुप्त रीति से चल रही है।

पृष्ठ २८ का शेष

जानता है कि समय तेजी से समाप्ति की ओर कदम बढ़ा रहा है इसलिए एक बाप की याद में खोकर अखुट अविनाशी खज़ानों को पाकर स्वयं को सम्पन्न बनाएं।

3. मुझे हर कर्म महान ही करना है—

मेहमान सदैव समझता है कि मैं अनेकों का प्रेरणास्रोत हूं इसलिए मेरा हर कर्म प्रेरक हो। मैं अनेकों के कर्मों को सुधारने के लिए निमित्त हूं, जैसा मेरा कर्म होगा, वैसा ही दूसरे अनुसरण करेंगे। इसलिए मुझे हर कर्म योगयुक्त तथा अनासक्त होकर करना है। वैसे भी कर्मों के आधार पर संस्कार बनते हैं। इसलिए रॉयल तथा ऊंचे संस्कार बनाने के लिए मेरा हर कर्म महान हो। जैसे ब्रह्मा बाबा यज्ञ सम्भालते हुए, कर्म करते हुए भी उससे न्यारे रहे, तभी तो कर्मातीत हुए। ऐसे ब्रह्मा बाप समान मुझे भी जाने से पूर्व इस विश्व में श्रेष्ठ कर्मों द्वारा आदर्श प्रस्तुत करना है।

''मेहमान ही महिमा योग्य''

तो इस प्रकार जो मेहमान बनकर यहां कार्यक्षेत्र पर अवतरित होते हैं, वे सचमुच ही महिमायोग्य बनते हैं। उनकी महान स्थिति की स्तुति स्वतः ही होती है। समय आयेगा कि सम्पूर्ण विश्व उन्हीं के अनासक्त भाव की महिमा गायेगा, उनके महान स्वरूप को देखकर महान बनने की प्रेरणा लेगा।

तो आओ, हम मेहमान बनकर इस धरा पर विचरें और अपनी पावन वृत्ति से सबको घर की राह दिखाएं। हमें अब शीघ्र ही इस विशाल विश्व से विदा लेनी है। अतः दिव्य स्वरूप धारण करके विदा लें और सभी के मार्ग प्रदर्शक बन जाएं। हमें ही सबको घर ले चलना है तो हम स्वयं को इतना महान बना लें ताकि समस्त विश्व हमारा अनुसरण कर सके और इशारा मिलते ही घर चलने को तैयार हो जाए। □

नारायणपुरा (अहमदाबाद) *साधना भवन के प्रांगण में ब्र.कु. चन्द्रिका बहन के साथ ट्रेनिंग कोर्स की कुमारियाँ दिखाई दे रही है।*

"कंचन और काम का सर्वथा त्याग"

□ब्र.कु. ओमप्रकाश, बांदा

सनातन धर्म की धर्म-ध्वजा सारे विश्व में फैलाने वाले प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक गुरु, उन्नीसवीं शताब्दी के महानतम संतों में प्रमुख स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी देव के जीवन की एक घटना इस प्रकार है—

बंगाल प्रांत के एक अति धनाढ्य सेठ स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी की कीर्ति सुनकर, उनके कलकत्ता शहर के गंगा किनारे स्थित दक्षिणेश्वर मन्दिर आश्रम में पधारे। उन्होंने स्वामी जी के दर्शन किये व उनकी ज्ञानवार्तायें सुनीं। महान संत की निष्कपट वाणी सुन, सेठ जी अत्यन्त प्रसन्न हुए तो उन्होंने आश्रम की सहायतार्थ झट जेब से १०,०००/- रुपये निकाल स्वामी जी के चरणों में रख दिये। स्वामी जी को जैसे ही रुपयों के बंडल का स्पर्श हुआ, स्वामी जी एकदम बिगड़ गये, उन्होंने रुपये उठाकर फेंक ही नहीं दिये वरन् डांटते हुये बोले, "तुम मुझे रुपया दिखाता है, चल हट जा मेरे सामने से, दूर हो जा मेरी नज़रों से।" सेठ जी स्वामी जी की यह मुद्रा देख एकदम सकपका गये। वे नोटों का बंडल सम्हालते उनके सामने से हट गये। सेठ जी बड़े असमंजस में थे। वे दो घंटे आश्रम के अन्य हिस्सों में घूमते रहे। उनको बड़ा आश्चर्य हो रहा था, उनके जीवन में पहली बार कोई ऐसा मनुष्य आया था, जिसकी कंचन (धन) के प्रति, ऐसी विचित्र दृष्टि हो, अन्यथा तो लोग सेठ जी को ही अन्य अनेक प्रकार की युक्तियां लगाकर प्रसन्न कर, रुपये प्राप्त करने के चक्कर में रहते।

आश्रम में घूमते उन्होंने स्वामी जी के शिष्यों से इसका कारण जानना चाहा किन्तु सब व्यर्थ। शिष्यगण भी इसके कारण का निवारण नहीं कर पाये। थोड़ा ही समय बीता कि सेठ जी को स्वामी जी ने बुलाया और अत्यन्त प्रेम पूर्ण, स्नेहयुक्त, सुमधुर वाणी में समझाया—"जानते हो मैंने ये रुपये क्यों वापस फेंक दिये?" सेठ जी को चुप देख, स्वामी जी ने समझाया, "देखो जैसे तुमने ये दस हज़ार रुपये मुझे दिये, जिन्हें मैं रख लेता अथवा इन्हें किसी शिष्य को ही दिला देता। फिर जब इन रुपयों को आश्रम की व्यवस्था में खर्च करने का अवसर होता तो शिष्य अपनी बुद्धि अनुसार इसे खर्च करने लगता, तो शिष्यगण चाहते कि इन्हें हमारी बुद्धि चातुर्य अनुसार खर्च किया जाये और मैं चाहता मेरे मन मुताबिक इन्हें खर्च किया जाये। अब शिष्यगण अपनी मर्जी से इन्हें खर्च करना चाहते। जब मेरे मन मुताबिक इसे खर्च नहीं किया जाता तो मेरे मन में अहंकार जाग्रत हो जाता। वाह! इन्हें तो सेठ जी ने मुझे दिया है। अतः इन्हें तो मेरे मन मुताबिक ही खर्च होना चाहिए। चूंकि ऐसा सोचना मेरे अहंकार को जागृत करता। अतः मैं कोई भी रुपये ग्रहण नहीं करना चाहता।"

उन्होंने आगे समझाया, मेरे जीवन का मार्गदर्शी सिद्धांत है "कामिनी और कंचन का सर्वथा त्याग। अहंकार को सर्वथा विदाई। मैं अपने जीवन में कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहता जो अहंकार जैसी बीमारी को जन्म दें।"

विचारणीय है महान दार्शनिक संत स्वामी रामकृष्ण जी देव की यह महीन बात। आज मनुष्य के पास जो भी है उसे उसी का गर्व ही नहीं है, परन्तु वह अत्यन्त लोभी हो गया है। वह करोड़ों की सम्पदा अपने नाम पर एकत्रित करना चाहता है, वह भूल जाता है कि उसके स्वयं (आत्मा) के देह त्यागते ही यह सब कुछ वहीं धरा का धरा रह जायेगा। लगता है निश्चय ही शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा के माध्यम से हम ब्रह्मा वत्सों को यह शिक्षा दी, "मीठे बच्चो, तुम्हें भी धन-पैसे के पीछे नहीं भागना है, वरन् तुम्हें तो बस अपनी मेहनत की कमाई अर्थात् ज्ञानार्थी बच्चों द्वारा भोग-भंडारी द्वारा मुझे (शिव बाबा को) अर्पित धन द्वारा ही अपना गुजारा करना है। सभी जानते हैं कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के हर सेवा-केंद्र पर एक शिव बाबा की "भोग भंडारी" होती है, और इसी में जो भी धन पैसा एकत्रित होता है, ब्रह्माकुमारी बहिनें-भाई उसी से आश्रम की व्यवस्था चलाते हैं। दूसरी संस्थाओं की तरह यहां जनता से चंदा एकत्रित करने की कोई परम्परा नहीं है।

जहां तक काम का सवाल है ब्रह्माकुमार, कुमारियों के पास तो है ही अमोघ शस्त्र 'ब्रह्मचर्य'। मनसा, वाचा, कर्मणा सम्पूर्ण पवित्रता का लक्ष्य। □

प्रेम, एकता से सुखमय संसार

ब्र.कु. प्रेमकुमार आबू पर्वत

आओ जलाएं दीप शान्ति का
पावन पथ निर्माण करें-
घोर निराशा के तम में
शुभ आशा का संचार करें। आओ जलाएं...

हर मन की सच्ची शान्ति ही
विश्व शान्ति आधार है।
प्रेम-एकता में दिखता-
प्यारा सुखमय संसार है।

परमपिता के दिव्य ज्ञान से जन मानस उत्थान करें..

हम हैं शान्ति स्वरूप आत्मा
शान्ति अपनी शान है।
शान्ति धाम घर, शान्ति सागर
शिव की हम सन्तान हैं।

मानवता से मूर्छित मन में दिव्यता का प्राण भरें...

आँख उठाए देख रहा है-
आज विश्व भारत की ओर।
मेरे भारतवासी जागो-
होता स्वर्णिम युग का भोर।

अमर ज्योति बन हर प्राणी को शान्ति सुपथ प्रदान करें

आओ जलायें दीप शान्ति का... □

"यह जगती तुम्हें पुकारे।"

ब्रह्माकुमार 'प्रकाश' राजयोग भवन, भोपाल

देव तुम्हीं होवनहारे,
यह जगती तुम्हें पुकारे।
उठो धरा परिस्तान बनाओ,
हर मानव दिव्य महान बनाओ।
काम, क्रोध, मद चूर करो,
जग से अंधियारे दूर करो
कोई सुख चैन चुराए ना
मोह, माया तुम्हें सताए ना।
हे पुरुष जगो मतवारे,
यह जगती तुम्हें पुकारे

भौतिकता में आकर्षण कितना है,
पर दिखता जो कुछ वह सपना है।
बदरंगे चेहरों में पहचान करो,
कौन पराया, कौन अपना है।
दुश्मन कोई, फिर धाक जमाए ना,
इस सोने को खाक मिलाए ना।
तुम भारत माँ के रखवारे,
यह जगती तुम्हें पुकारे।

दुख दर्द भरे से नजारे हैं,
कुछ थके हुए कुछ हारे हैं।
हैं आँखों के दीपक बुझे हुए,
और अधरों की कलियाँ मुरझायी सी।
सितम और कोई अब ढाए ना,
आग में आग लगाए ना।
तुम मानवता के सहारे
यह जगती तुम्हें पुकारे। □

भावनगर *में सद्भावना सम्मेलन में विभिन्न धर्मों के नेताओं ने भाग लिया।*

संस्कृति, सभ्यता की समन्वय सेतु दीवाली

बी.के. अवतार, आबू पर्वत

इस भारत देश की महिमा ही अनुपम है क्योंकि इस देश की गौरव गरिमा में चार चाँद लगाने की अति महत्वपूर्ण भूमिका है इन धार्मिक उत्सवों, पर्वों एवं त्योहारों की । यहाँ की धर्मपरायण जनता का यह अटूट विश्वास है कि हमारी उच्चतम संस्कृति एवं सुसभ्यता के समन्वय सेतु एंव मानवीय अलौकिक गौरव गरिमा तथा नैतिक-मूल्यों की सुरक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता के आधार स्तम्भ हैं ये त्योहार ।

हमारे पुरातन चिन्तक मनीषियों ने इन त्योहारों का नानाविधि महत्व बताकर मानवीय मन में इनके प्रति आस्था बनाये रखने का जो भागीरथ कार्य किया वह उल्लेखनीय है, अनुकरणीय है ।

मनीषियों के अनुसार वर्ष भर में शायद ही कोई तिथि आती हो जिसे हम किसी पर्व अथवा त्योहार से न जोड़ सकें । हाँ कुछेक उत्सव मानवीय हितैषी भावनाओं को प्रथम पंक्ति में स्थान देने हेतु स्वयं का स्थान भी ऊँचा बना चुके हैं अतः अपने विशेष महत्व के कारण मानवीय मन में श्रद्धा का स्थान प्राप्त कर चुके हैं ।

भारतीय जीवन दर्शन अथवा लोक मान्यताओं के अनुसार मनाये जाने वाले कुछेक त्योहार हैं शिवरात्रि, होली, रक्षाबन्धन और दीवाली आदि-आदि ।

इन सभी त्योहारों का तो महत्व ही अपने-आप में अनुपम है । पौराणिक साहित्य के अनुसार तो यह त्योहार अनेकों कथाओं से जुड़े हुए हैं ।

इस दीवाली महोत्सव के विषय में पौराणिक चिन्तकों की मान्यतायें है कि कहते है एक बार दैत्यराज नरकासुर नामक राक्षस ने पृथ्वी को भयभीत कर दिया था यहाँ तक कि सहस्त्रों राज-कन्याओं सहित श्री लक्ष्मी जी एवं अनेकों देवताओं को स्वयं की कारागार में बन्दी बना कर नाना प्रकार की यातनायें दे कर उन्हें सताया जाता था ।

कार्तिक मास की अमावस्या के दिन ईश्वरीय मधुर अनुकम्पा से अधम अत्याचारी दानव नरकासुर का वध हुआ एवं बन्दी बने कैदियों को विमुक्ति मिली । तदन्तर उन स्वतंत्र हुए बन्दियों ने दीपोत्सव के रूप में खुशियां मनायी और कालान्तर में वही उत्सव एक प्रथा के रूप में प्रचलित होकर दीवाली के रूप में लोकप्रिय हो गया ।

मानवीय एकता का यह पर्व आज अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है । क्योंकि विजयदशमी के उपरान्त इस त्योहार के आने का यह स्पष्टतः द्योतक है कि असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म की विजय की खुशी का ही ये त्योहार है ।

साधकों के लिए भी यह पर्व अति महत्वपूर्ण है । विडम्बना यह है कि कुछ स्वार्थी तत्वों ने धूत-क्रीड़ा (जुआ), जैसे समाज विरोधी एवं वर्जित खेल को अपनाकर इस पर्व की महिमा को धूमिल कर दिया है ।

शरद ऋतु के आगमन का उल्लास पर्व है यह दीवाली पर्व । स्वच्छता एवं प्रकाश का यह पर्व यद्यपि व्यापारी वर्ग को विशेष मान्य है तथापि आधुनिक युग में वर्ण, जाति, धर्म आदि से ऊपर उठ कर यह पर्व सार्वभौमिक अभिनन्दन का पात्र बन गया है ।

हालांकि वर्तमान परिवेश मे दुर्वह जीवन के कारण सामान्य परिवारों में इसका रंग फीका-सा पड़ता जा रहा है । बात भी निर्विवाद ही सत्य है कि इस कमर तोड़ मंहगाई का असहनीय भार जो कि साधारणतः जीवन-यापन करने को विवश है वह भला पर्व, त्योहारों की क्या सुधि ले ।

हाँ समय एवं परिस्थितियां कुछ भी हों किन्तु यह पर्व हमारी सुसंस्कृति एवं उच्च-सभ्यता के समन्वय सेतु अथवा हमारे अतीत की महानता की यादों को प्रतिवर्ष कार्तिक की अमावस्या को पुनः ताजा करने का अद्वितीय पर्व है दीवाली ।

दीवाली पर्व लक्ष्मीपूजन एवं आह्वान का है । ऐसी लोक धारणायें है । अतः दीवाली के दिन लोग लक्ष्मी जी के आह्वान हेतु घर के दरवाजे खुले छोड़कर सो जाते है । आज के माहौल में यह तो उचित नहीं । इस सन्दर्भ में एक घटना स्मृति पटल पर उभर आई । वह यह कि एक बार मेरे एक मित्र के घर में प्रथा के अनुसार सब सो गये प्रातः उठकर देखा तो लक्ष्मी जी की अपेक्षा घर का सारा माल-पाणी यहाँ तक कि खाने-पीने के बर्तन भी नदारद थे । अतः दरवाजे खुले छोड़ने से लक्ष्मी का तो नहीं अपितु चोरों का रास्ता अवश्य ही खुल जाता है ।

आध्यात्मिक विवेचन दीवाली का

अब विचारनीय प्रश्न यह है कि प्रतिवर्ष श्री जी के आह्वान में हम दीप जला कर उनके आने का अभिनन्दन करने की प्रतिक्षा करते हैं परंतु श्री लक्ष्मी तो हमसे उतनी ही दूर होती जा रही है जितना अधिक उनके दर्शनों को हम व्याकुल हैं ।

लगता है अवश्य इसमें कोई कमी रह गयी है या जिस दीप को प्रदीप्त कर वह खुश होगी वह दीप शायद हम प्रज्ज्वलित न कर पाये हों !

वास्तविक अर्थों में तो आत्मा ही वह दिव्य ज्योति है जो विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण स्वयं के प्रकाश को धुन्धला कर बैठी है । यहाँ तक कि वह उस टिमटिमाती अवस्था में है जिसके बाद लो समाप्त हो जाती है ।

तात्पर्य यह कि मानवीय अन्तर निहित भावनायें तमशाच्छन्न हैं । अतः विकारों की आग में जलते हुए मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी भला कैसे आ सकेगी ! अतः अब आवश्यकता है पुनः ईश्वरीय पुनीतस्मृति द्वारा आत्मा रूपी दीपक को प्रदीप्त कर मन मन्दिर की सफ़ाई करने की !न कि मिट्‌टी के दीपक जला कर घर की सफ़ाई मात्र से सन्तुष्ट हो जाने की ।

बस श्री लक्ष्मीजी को पुनः वसुधा पर लाने का एक ही उपाय है और वह यह कि ईश्वरीय निरन्तर याद एवं स्वयं परमपिता शिव परमात्मा द्वारा दी जाने वाली शिक्षा का अनुकरण करना ।

खाता परिवर्तन का भी आध्यात्मिक रहस्य यही है कि अपने पुराने दुश्परिणित संस्कारों का खाता समाप्त कर नवीन सत्परिणित शुद्ध दिव्य स्वभाव, संस्कारों के विकास का खाता खोलना है । यही दीवाली जैसे महान और पुनीत पर्व के लिये हमारा सम्मान होगा । □

पृष्ठ ६ का शेष

बढ़ेगा, उतना ही उनसे प्यार बढ़ेगा । "वह हमारा ही है"—परंतु यह सत्य विस्मृत हो जाता है । अब इस स्मृति को जितना शक्तिशाली बनायेंगे, प्यार बढ़ेगा और यह प्यार हमें योग में मग्न स्थिति का अनुभव करायेगा । इस अपने-पन की अनुभूतियों के बाद योग एक अभ्यास नहीं लगेगा ।

तो प्रतिदिन आँख खुलते ही यह आवाज़ कानों में गूंजे—

"बच्चे मैं तुम्हारा ही तो हूँ"

और दूसरी आवाज़ कानों में गूंजे—

"बच्चे, मैं तुम्हारे साथ हूं", तुम अकेले नहीं हो, मैं यही हूँ...डरो मत, चिंता मत करो । ये बोल आत्मा को बहुत शक्तिशाली बनायेंगे । जीवन से अकेलापन समाप्त हो जाएगा, मन ईश्वरीय रस में मग्न होता रहेगा, जीवन निर्भय व निश्चिंतता की अडोल स्थिति की ओर बढ़ेगा तथा योग-अभ्यास की सभी कठिनाईयाँ सरल हो जायेंगी ।

तो हे योग मार्ग के पथिको—संसार से सभी मेरे-पन समाप्त करके एक परमपिता से ही यह 'मेरा-पन' जोड़ लो । "भगवान मेरा है"—यह सूक्ष्म नशा हमें संसार के प्रभाव से मुक्त रखेगा, यही स्मृति हमें शक्तिशाली योग का भी अनुभव करायेगी और हमें नशा रहने लगेगा— □

जिसका साथी हो भगवान
उसे क्या रोकेंगे, आँधी और तूफ़ान...

आत्मा

ब्र.कु. राजकुमार मीतल, दिल्ली

प्रात उठूँ चिन्तन करूँ, बड़ौ अजूबा होय ।
बिन्दु सम लघु आत्मा, चला रही है मोय ॥ १ ॥
सकल चौरासी जन्म का, भरा बिन्दु में पार्ट ।
नहीं घिसै नहीं बदले, एक्युरेट रिकार्ड ॥ २ ॥
अकाल तख्त भ्रकुटी मेरी, तापर मैं आसीन ।
कर्मेन्द्रियों का राजा, फिर भी क्यों आधीन ॥ ३ ॥
मैं आत्मा अविनाशी, मार सकै नहीं कोय ।
पवन सोख नहिं अग्नि दह, नहीं गलावै तोय ॥ ४ ॥
मार सके नहीं अस्त्र कोई, अग्नि नहीं जलाय ।
वायु जल स्पर्श नहीं, मैं तो हूँ निष्काय ॥ ५ ॥
जीर्ण होय चोला जभी, तुरत छोड़ नव पाँउ ।
रोते क्यों नर नारि सब, जब मैं खुशी मनाँउ ॥ ६ ॥
अनादि ज्योति बिन्दु मैं, निराकार विख्यात ।
ज्ञान, शक्ति पवित्रता, प्रेम पुंज पर्याप्त ॥ ७ ॥
अकाल तख्त है भ्रकुटि यह, जहाँ मैं बैठा बिन्दु ।
शान्ति प्रेम पवित्रता, ज्ञानानन्द सिन्धु ॥८ ॥
सर्वशक्ति सम्पूर्ण, सर्व गुणन भर पूर ।
बिन्दु रूप स्थिति सबला, मस्तक चमकै नूर ॥ ९ ॥
मैं आत्मा हूँ राजा, कर्मेन्द्रिय मम दास ।
कर्म करत स्थिति यह, तब होवै फुल पास ॥ १० ॥

"हम थोड़े से दिन के मेहमान हैं"

□ब्र.कु. आत्मप्रकाश, आबू-पर्वत

भगवान आकर मनुष्यात्माओं को सम्पूर्ण पावन बनने की अनेक युक्तियां बताते हैं। सम्पूर्ण ज्ञान देकर उन्होंने हमें यह रहस्य स्पष्ट कर दिया है कि तुम्हें परमधाम से आये हुए ५००० वर्ष हो गये हैं, अब तुम्हें वापस चलना है, तुम्हारी यह वापसी यात्रा है, मैं तुम्हें लेने आया हूं। और जो आत्माएं समय के इस सत्य रहस्य को जान लेती हैं, वे घर वापिस चलने की तैयारी करने लग जाती हैं, वे सम्पूर्ण पावनता की ओर बढ़ चलती हैं और इस संसार से उपराम होने लगती हैं। तो भगवान के महावाक्यों को सुनकर जिन्हें ये दृढ़ विश्वास हो चुका है कि अब तो शीघ्र ही हमें घर चलना है, वे स्वयं को इस दुनिया में एक मेहमान मानकर, मेहमान की न्याईं ही इस वसुन्धरा पर विचरण करते हैं।

तो प्रस्तुत चर्चा में हम विचार करेंगे कि कैसे स्वयं को मेहमान समझने से हमारी स्थिति महान् बन जाती है, हम अनासक्त हो जाते हैं, अपने पुरुषार्थ को तीव्र कर लेते हैं। वैसे भी विश्व दिनों-दिन तीव्रता से संहार की ओर बढ़ रहा है। आये दिन अनेक मौतों के समाचार हम सुनते रहते हैं। तो वैसे भी हम सब थोड़े ही समय के लिए इस जग में मेहमान हैं। यदि हमारी मेहमान की वृत्ति होगी तो हम कहीं भी अटकेंगे नहीं।

जब हम यहां आये थे

कहते हैं इन्सान इस संसार में खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है। लेकिन नहीं, जब हम यहां आये थे तो भरतु हाथ आये थे अर्थात् आत्मा सर्वगुणों तथा शक्तियों के ख़ज़ानों से सम्पन्न थी। हमारे जीवन में सुख, शांति, आनन्द, पवित्रता जैसे दिव्य गुण विद्यमान थे। आत्मा अकेली, न्यारी और निराकारी ज़रूर थी लेकिन दिव्य गुणों के अलौकिक श्रृंगार से सजी-सजाई आई थी।

माया ने मेहमान का अपमान किया

इस बेहद नाटकशाला में पार्ट बजाते-बजाते जन्म प्रति जन्म आत्मा के पवित्रता जैसे महान गुण का ह्रास हुआ तो वह शक्तिहीन होती गई फलतः माया ने अपने चंगुल में फंसाकर उसका अपमान किया। पांच विकारों के कड़े बन्धनों में फंसी हुई आत्मा में हीनता के भाव जागृत हुए जिससे वह अपनी श्रेष्ठ स्थिति से गिरती गयी जिससे वह अपनी मौलिक सूझ-बूझ ही खो बैठी। उसे यहां तक अविद्या हो गयी कि मुझे क्या करना उचित है और क्या करना अनुचित है तथा जिस कर्म को मैं कर रही हूं, उसका परिणाम क्या होगा ?

भगवान ने मेहमान का सम्मान किया

आत्मा की इस करुणामय स्थिति को देखकर दया के सागर परमात्मा ने आकर उसे स्व की यथार्थ पहचान दी और स्वमान को ऊंचा उठाकर उसका सम्मान किया और अनोखा राज़ सुनाया कि परमधाम तुम्हारा असली घर है। यह दुनिया तो कार्यक्षेत्र है।

भगवान ने कहा कि मैं आया ही हूं तुम्हें अपने समान अशरीरी बनाकर घर वापस ले चलने। इसके लिए एक फरमान सदा याद रखना **"देह सहित देह के सम्बन्धियों को भूलकर मुझ निराकार बाप को याद करो...**

मेहमान की विशेषताएं

वास्तव में मेहमान समझने से जीवन में कई विशेषताएं स्वतः ही आने लगती हैं जिससे मेहमान महान आत्मा कहलाता है, उसका जीवन दिव्य तथा विशेषताओं से सम्पन्न दिखाई देता है।

मेहमान सदा अपने ऊंचे स्वमान में रहता है

मेहमान कभी भी अपने गौरव को नहीं भूलता। जब कोई कहीं मेहमान बनकर जाता है तो अधिक ही नशे में रहता है। तो हम भी इस धरा पर मेहमान बनकर आये हैं तो हमें भी सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहना है। मेहमान को सदा नशा रहता है कि विश्व की सर्वोच्च सत्ता (शिव बाबा) मेरे साथ है। मुझे उससे सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए हैं। वह ऐसे ऊंचे स्वमान में रहते हैं जो उसके नशे के प्रकम्पन स्वयं के लिए तथा दूसरों के लिए भी छत्रछाया का काम करते हैं।

मेहमान को इस पुरानी दुनिया के कोई अरमान नहीं होते हैं

मेहमान जहां जाता है वहां के लिए कोई अरमान नहीं रखता। मेहमानदारी में जाना ही उसके मन का अरमान होता है। मेहमान न ही कोई अरमान रखता है बल्कि दूसरों के अरमानों को पूर्ण करता है। वह जानता है कि इस विनाशी पुरानी दुनिया

के अरमानों से तो अल्पकाल की विनाशी प्राप्ति होती है। वास्तव में यही अरमान भगवान के फरमान पर चलने में बाधक है।

मेहमान की एक आंख में मुक्ति दूसरी आंख में जीवन-मुक्ति होती है

मेहमान की एक आंख में मुक्ति अर्थात् शांतिधाम घर की स्मृति रहती है और दूसरी आंख में जीवनमुक्ति अर्थात् सत्युगी दुनिया के नज़ारे रहते हैं जिससे उसकी आंख यहां की किसी भी बात में नहीं डूबती है। फलस्वरूप मेहमान देह और देह के सम्बन्धियों के बन्धन से मुक्ति, रोगों के भोगों से मुक्ति, मोह के जंजाल से उत्पन्न पीड़ाओं से मुक्ति, अहंकारवश परेशानियों से मुक्ति, मृत्यु के भय से मुक्ति पाकर इस जीवन में ही जीवनमुक्ति अनुभव करता है।

मेहमान को यह दुनिया पराई अनुभव होती है

मेहमान की पक्की धारणा होती है —"मेरा यहां कुछ भी नहीं।" यह देह भी मेरी नहीं बल्कि इस प्रकृति की दी हुई अमानत है। ये देह के सम्बन्धी भी इस लम्बी यात्रा में अन्तिम साथी हैं जो निश्चित ही एक दिन साथ छोड़ देंगे। ऐसी बेहद की वैराग्य वृत्ति होने से उसे यह दुनिया बिल्कुल पराई लगती है। कहते हैं—पंछी और परदेशी, कभी नहीं होते किसी के मीत। तो मेहमान भी पंछी और परदेशी है, इसलिए वो किसी का नहीं होता अर्थात् किसी से भी उसका लगाव-झुकाव नहीं होता है। मेहमान का न्यारापन सम्पूर्ण और प्यार निमित्त मात्र होता है।

मेहमान को कभी भी कोई अनुमान नहीं होता है

मेहमान सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि होने से अनुमान की बुद्धि को छू तक नहीं सकता। वास्तव में अनुमान न लगाने वाले का नाम हनुमान है। हनुमान का राम पर पूर्ण निश्चय था इसलिए उसके रोम-रोम में राम की याद समाई हुई थी। राम की सुखद याद से उसे हल्केपन की तथा शक्तिशालीपन की अनुभूति होती थी। ऐसे ही हनुमान की तरह निश्चयबुद्धि मेहमान के दिल में निराकार राम की याद समाई रहती है। अगर रास्ते में समस्या रूपी पहाड़ भी आता है तो मेहमान उसे भी याद के बल से उठाकर इस विषय सागर को पार कर लेता है।

मेहमान को कभी मिथ्या अभिमान नहीं होता है

मेहमान सदा स्वयं को निराकारी आत्मा समझता है इसलिए सदा निरंकारी रहता है। उसके हर बोल तथा कर्म से नम्रता झलकती है। मेहमान दिनों-दिन देह-भान से मुक्त होता जाता है जिससे देह भान के सभी लक्षण उससे लोप होते जाते हैं। वास्तव में मेहमान की महानता यही है कि वह 'मैं-पन' का त्याग करता है और जो भी गुण और शक्तियां उसे प्राप्त हुई हैं उसे वह बाबा की देन समझता है।इसलिए स्वप्न में भी उसे अभिमान नहीं होता है।

मेहमान समय के खज़ाने का पूरा लाभ लेता है

मेहमान को यह निश्चय रहता है कि यहां हम थोड़े से दिनों के मेहमान हैं। हमें भाग्य निर्माण के लिए बहुत थोड़ा समय मिला है। वर्तमान समय के हीरे तुल्य जीवन की हर घड़ी हीरे तुल्य है। हर सेकण्ड का सम्बन्ध सारे कल्प से है। इन्हीं गिनी-चुनी घड़ियों में मुझे अपने भाग्य का सितारा चमकाना है। वास्तव में समय का खज़ाना सबसे अमूल्य खज़ाना है क्योंकि यह खजाना अन्य खजाने पाने का आधार है। इसलिए मेहमान समय को व्यर्थ न गंवाकर पूरा-पूरा लाभ लेता है।

मेहमान की सदा सभी के प्रति शुभ भावनाएं रहती हैं

मेहमान की,आत्मिक दृष्टि होने से उसे यह संसार रूहों की दुनिया अनुभव होती है। वास्तव में आत्मिक दृष्टि ही सर्वोच्च दृष्टि है, सम-दृष्टि है जिससे भेदभाव नष्ट हो जाते हैं और सदा सभी के प्रति शुभभावनाएं रहती हैं। इसी महानता की दृष्टि से मेहमान के शुभ भावनाओं के भंडार भरपूर होते हैं। उसके मन में सर्व के प्रति स्नेह की तथा रहम की भावना रहती है। सभी को उससे कुछ न कुछ सहयोग प्राप्त होता ही रहता है। इसलिए मेहमान के प्रति सभी के मन में स्नेह व सम्मान की भावना होती है।

मेहमान सदा याद रखता है :

1. **मुझे हिसाब-किताब पूरा करना है**

जब हम व्यक्त भाव में आकर पार्ट बजाते हैं तो व्यर्थ संकल्प, वाचा, कर्मणा से अनेक आत्माओं के साथ अच्छे या बुरे कर्मों के हिसाब का बहुत बड़ा किताब बनता है। तो मेहमान त्रिकालदर्शी बन चाहे कर्मभोग से या योग से अपनी स्थिति को एकरस रखकर चुक्ता करता रहता है। वह जानता है कि खुशी से ही चुक्तु करने में कल्याण है। चुक्तु करते समय अगर हमारे मन में किसी व्यक्ति के बारे में व्यर्थ संकल्प चलते हैं तो पुनः नया हिसाब का खाता बनता है। मेहमान को सदा यही तात रहती है कि जल्दी से जल्दी इस खाते को समाप्त करके बन्धनमुक्त योगयुक्त स्थिति को प्राप्त करूं।

2. **मुझे खज़ानों से भरपूर होकर जाना है—**

वैसे भी जब हम घर वापस जाते हैं तो भरपूर होकर जाते हैं। तो ऐसे ही बेहद घर वापस जाने की तैयारी करने के लिए हमें अथाह खज़ाने जमा करने हैं जो हम खुद भी २१ जन्मों तक मालामाल रहें और अपने साथियों को भी बांट सकें। मेहमान

—शेष पृष्ठ २२ पर

विश्व में शान्ति आध्यात्म द्वारा ही होगी

-स्वामी ब्रह्मानंद गिरि

माऊन्ट आबू, 28 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन का आज सायंकालीन अधिवेशन में सम्मेलन के मुख्य अतिथि स्वामी ब्रह्मानंद गिरि जी, अध्यक्ष,गिरिशानन्द आश्रम् कनखल, हरिद्वार ने कहा कि विश्व में जब कभी भी शान्ति होगी तो वह आध्यात्म द्वारा ही होगी। यहा सतोप्रधानता दृष्टिगोचर होती है तो समस्त विश्व में भी ऐसी सात्विकता लाई जा सकती है। इस दृष्टि से सतयुग आ सकता है। ब्रह्माकुमारीयों और ब्रह्माकुमारों का जनक सत्य पिता परमात्मा ही है। वैदिक परम्परा और इस परम्परा में कोई भेद नहीं है। रूचि भेद से गेहूँ के अलग 2 व्यंजन बनाए जाते हैं पर लक्ष्य भूख की तुष्टि तो होती है। यहां भी परमात्मा की सत्ता वही है।

सम्मेलन की अध्यक्षा संस्था की सहप्रशासिका राजयोगीनी दादी जानकी जी ने कहा कि आज के संसार में चारों ओर भय व्याप्त है लेकिन हम ब्रह्माकुमारीयों जैसा निर्भय कोई नहीं, हमें मृत्यु का भी भय नहीं है। ऐसा निर्भय बनाने वाला स्वयं परमपिता परमात्मा है जिसने कहा कि देह सहित देह के सर्व संबधों को भूलकर अशरीरी बनो। मन को मेरे में लगाओ यह कहने वाला कौन ? निराकार परमात्मा शिव या कि श्रीकृष्ण ? श्री कृष्ण की याद से वृन्दावन वाले की लीलाएं तथा गोप गोपियां याद आवेंगी लेकिन निराकार की याद हमें ऊपर ले जाती, विकर्माजीत, कर्मातीत, इन्द्रियजीत बना देती। अतः अब वही निराकार परमात्मा हमें नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा बनाकर अपने परमधाम ले जा रहा है।

देहली की क्षेत्रीय प्रशासिका ब्रह्माकुमारी हदयमोहिनी जी ने कहा कि राजयोग का अर्थ है आत्मा का परमात्मा से मिलन अथवा संबंध। आत्मा का परमपिता से अनादि अविनाशी पिता और पुत्र का नाता है। केवल उसे स्मृति स्वरूप में लाने की आवश्यकता है। अतः परमात्मा का परिचय, स्नेह और संबंध की जानकारी होते ही आत्मा का संबंध उस प्यारे परमपिता से हो जाने पर अनुभूति की प्राप्ति होना आरम्भ हो जाती है। इस प्राप्ति के आधार पर विभिन्न ईश्वरीय अनुभुतियों के आधार पर आत्मा का आतंरिक परिवर्तन होने लगता है। इस प्रकार सहज राजयोग से सुख-शान्ति, आनन्द से भरपूर आत्मा अन्य मनुष्यात्माओं के लिए उदाहरण बन जाती है। अतः अब वही समय चल रहा है जबकि सहज ही परमपिता परमात्मा से मिलन और प्राप्ति हो रही है। सम्मेलन के आदरणीय अतिथि स्वामी सच्चिदानन्द जी, अध्यक्ष, वेदान्त निकेतन, अमृतसर ने कहा कि आज हमारे विचार, बुद्धि तथा संबंध अलग होकर बिखर गए हैं। इन सभी को आपस में जोड़ना ही योग है। आचरण को सुधारना है। मन और बुद्धि का संतुलन बनाए रखना है। यह मानव जीवन का लक्ष्य प्रभु प्राप्ति है। अतः देखना है तो स्वयं को देखो और सुधार करो। विवेक हमारी रक्षा करता है अतः विवेक का प्रकाश होना सभी में आवश्यक है।

सम्मेलन के माननीय अतिथि स्वामी गणेशानन्द गिरि, अध्यक्ष, देहली प्रदेश, भारत साधु समाज, देहली ने कहा कि आज मानव का मन विषयासक्त होने कारण ही वह अनेकानेक बंधनों में फंस गया है। विषयों से मुक्त मन ही मुक्ति पाने का अधिकारी बनता है। अतएव मन को ज्ञान से मुक्ति की ओर मोड़ने से उसके व्यवहार में परिवर्तन आवेगा और वह बुराइयों से निकलकर अच्छाइयों की ओर प्रवृत्त होगा। आप जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हैं तो पहिले स्वयं ही ऐसा व्यवहार दुसरों से करना आरंभ करो।

सम्मेलन की माननीय अतिथि डॉ० हन्सा रावल, यु०एस०ए० ने कहा कि आज का मानव अनेक मतभेदों के उलझन में फंसने कारण सही निर्णय नहीं कर पाता कि क्या करें, क्या नहीं करें। तलवार की शक्ति और ईश्वरीय शक्ति में विजय ईश्वरीय शक्ति की ही होती है। अत : हमें ईश्वरीय शक्ति को अपनाकर शक्तिशाली संगठन बनाना पड़े तभी हम विज्ञान पर भी विजय प्राप्त कर सकते तथा भटकते, उलझते मानव को सही मार्गदर्शन दे सकते है।

कार्यकम के मध्य में बम्बई के ज्योति गोकर्ण तथा मंगेश गोकर्ण ने गीत प्रस्तुत किए। देहली से ब्रह्माकुमारी चक्रधारी बहिन ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। कार्यक्रम का संचालन बम्बई के ब्रह्माकुमार रमेश शाह ने किया। तथा मध्यप्रदेश इन्दौर के क्षेत्रीय निदेशक ब्रहमाकुमार ओम प्रकाश जी ने धन्यवाद दिया।

"सतोप्रधानता एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण जीवन दर्शन से सतयुग अवश्य आयेगा" -स्वामी रामदास शास्त्री

माउण्ट आबू 29 सितम्बर । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय विश्व-शान्ति आध्यात्मिक सम्मेलन में द्वितीय दिवस पर ओमशान्ति भवन के सभागार में "शान्ति के लिए अनुभवगम्य एवं सरल व्यवहारिक जीवन दर्शन" तथा "आध्यात्मिकता द्वारा आपसी एकता एवं विश्व एकता" विषयों पर बोलते हुए सम्मेलन के प्रातःकालीन अधिवेशन के मुख्य अतिथि स्वामी रामदास शास्त्री, अध्यक्ष, चार सम्प्रदाय आश्रम वृन्दावन ने कहा कि आज हमारे समक्ष महाभारत काल उपस्थित है । समाज का, देश का कितना पतन हो गया है, ऐसे समय पर यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की गतिविधियों कार्यकलापों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह ईश्वरीय कार्य है । यहा का सतोप्रधान वातावरण, सेवापरायणता, निर्मल एवं प्रसन्नता से ओतप्रोत चेहरे हमें यह आभास देते हैं कि सतयुग जरूर आवेगा। भारत देश महान है । आज पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा ने हृद्यो को बदल दिया, रहन सहन जीवन दर्शन की प्रक्रिया ही बदल दी वास्तव में यह बहुत बड़ा आश्चर्यजनक कार्य है । सम्मेलन की अध्यक्षता संस्था की संयुक्त प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणी जी ने कहा कि सर्व के सहयोग से ही यह संसार परिवर्तित होगा । श्रेष्ठ व्यवहार का आधार श्रेष्ठ स्मृति और दिव्य बुद्धि है । यह दोनों ही श्रेष्ठ वरदान अभी हमें परम-पिता परमात्मा दे रहा है । ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग, दिव्यगुणों की धारणा तथा अन्य आत्माओं की सेवा इन चार विषयों में पारंगत होने वाली आत्माओं का जीवन दर्शन ही दूसरों के लिए दिशा दर्शन बन जाता है । सम्मेलन की प्रमुख वक्ता संयुक्त राष्ट्रसंघ में संस्था की स्थाई प्रतिनिधि राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहिन ने कहा कि हम सभी सहमत हैं कि हम आत्माएं हैं, परमपिता परमात्मा एक है, सर्व का लक्ष्य ही शान्ति प्राप्ति है, घर हमारा परमधाम है, अतएव इस समानता के आधार पर एकता हमारा व्यावहारिक धर्म है । एकता और स्नेह ही परिवर्तन के आधार है । स्नेह से सहन शक्ति, परिवर्तन शक्ति आती है । अतएव आत्मिक स्नेह, ईश्वरीय स्नेह तथा आध्यात्मिक शिक्षा मानव जीवन में निरंतर मिलती रहे तो जीवन में अतिशीघ्र परिवर्तन आता है । यह व्यावहारिक जीवन दर्शन ही परस्पर एकता और विश्व एकता लावेगा ।

सम्मेलन के माननीय अतिथि स्वामी अभेदान्द, सनातन धर्म, अहमदाबाद ने कहा कि हम साम्प्रदायिक रीति-रिवाजों को किनारे रखकर इस विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन में एकता भाव से सम्मिलित हुए हैं। देश के विशिष्ट विद्धान शान्ति के लिए प्रयास कर रहे हैं । आध्यात्मिक अशान्ति का कारण यदि खोजे तो मानव स्वयं ही अशान्ति का कारण है। शान्ति की प्राप्ति के लिए निरपेक्ष एवं त्यागमय जीवन चाहिए तभी शान्ति की अनुभूति होगी

सम्मेलन के माननीय अतिथि स्वामी माधवाचार्य, प्रधान मानस मन्दिर, कनखल, हरिद्वार ने कहा कि यह विश्व शान्ति आध्यात्मिक महासम्मेलन सभी के लिए प्रेरणा का श्रोत बनेगा । संसार में सुख कभी नहीं मिल सकता क्योंकि हर सुख के पीछे दुख छिपा हुआ है । आज भौतिकता का बाह्य चमक दमक व प्रदर्शन अत्यधिक है लेकिन आन्तरिक सुख नहीं है । विज्ञान भौतिक जगत को समझा सकता है लेकिन परमात्मा का ज्ञान नहीं समझा सकता । परमात्मा की दिशा में चलने का तरीका महात्मा ही बतला सकते है । यहां की साधना पद्धति, व्यवस्था पद्धति में चलने वाला व्यक्ति ही परमात्मा के पास पहुँच सकता है ।

सम्मेलन के माननीय अतिथि स्वामी हंस प्रकाश जी, अध्यक्ष, प्राचीन अवधूत मण्डलाश्रम, हरिद्वार ने कहा कि यहां के प्रत्येक क्रियाकलापों, व्यवहार में आध्यात्मिकता का समावेश है । सभी प्रसन्न चेहरे ही आध्यात्मिकता की झलक दिखा रहे हैं । शान्ति सभी चाहते हैं । लक्ष्य सभी का एक है, साधनाएं भिन्न हो सकती है "आनन्द स्वरूप" का बोध कराने से मानव पापों से बच सकता है और परमपिता परमात्मा की ओर बढ़ने का प्रयास करने लगता है ।

सम्मेलन में बम्बई की बहिन ज्योति गोकर्ण एवं भ्राता मंगेश गोकर्ण ने गीत प्रस्तुत किये। अहमदाबाद की ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका बहिन ने सामूहिक योगाभ्यास कराया । कार्यकम का संचालन चंडीगढ़ के ब्रह्माकुमार अमीरचन्द्र जी ने किया तथा जयपुर के ब्रह्माकुमार भ्राता मदनलाल शर्मा जी ने धन्यवाद दिया ।

"आत्मा का स्वधर्म ही है शान्ति और पवित्रता"

-ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणी जी

माऊन्ट आबू, 29 सितम्बर । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय "विश्व शान्ति आध्यात्मिक महा सम्मेलन" ओमशान्ति भवन के सभागार में समापन समारोह की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणी, मुख्य प्रशासिका ने कहा कि आत्मा का स्वधर्म है ही शान्ति और पवित्रता । हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई यह सब देह पर आधारित धर्म हैं । अतः अपने शान्ति स्वरूप में स्थित होकर प्रेम, शान्ति, आनन्द, ज्ञान के सागर, सर्वशक्तिवान परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर समान स्थिति को प्राप्त करना है । करनकरावनहार वही परमात्मा है हम तो केवल निमित्त हैं । "मैं-मेरा"के स्थान पर "तू-तेरा"-ऐसे समर्पण की भावना से अशान्ति समाप्त हो सदा के लिए शांति आजाती है ।

मुख्य अतिथि स्वामी चैतन्यदास जी, अध्यक्ष, उदासीन अखाड़ा दतिया ने कहा कि जब तक परमात्मा के प्रति हमारे मन में विश्वास और श्रद्धा का प्रादुर्भाव नहीं होता तब तक कोई भी प्राप्ति नहीं हो सकती । कोई सिद्धि नहीं आ सकती । यहाँ की दिव्यता एवं ईश्वर प्रदत्त शक्तियों से मानव का अवश्य ही कल्याण होगा और विश्व शान्ति होगी । ऐसे कार्य में हमारा सदा सहयोग एवं शुभकामना रहेगी । माननीय अतिथि डाक्टर स्वामी किशोरदास जी, सहमन्त्री, अखिल भारतीय उदासीन परिषद, हरिद्वार ने कहा कि आध्यात्मिकता एवं राजयोग द्वारा ही शान्ति की प्राप्ति हो सकती है । धनार्जन द्वारा सुख-शान्ति की इच्छा रखना केवल मृगतृष्णा है । गीता के अठारह अध्यायों में अठारह ही प्रकार से योग को समझाया गया है । अतः परमपिता परमात्मा से चित्त जुड़ जावे यही योग है । जब मानव रूप, रस, गंध की और दौड़ता तो दुखी होता और जब उसका मन परमात्मा की याद में लवलीन हो जाता तो सुख एवं शान्ति की प्राप्ति करता है । अतः अपने आपको परमात्मा के सामीप्य स्थिति में रखना ही श्रेयस्कर है ।

हरिद्वार सेवाकेन्द्र की राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्माकुमारी प्रेम बहिन ने कहा कि आज सभी का प्रयास सुखशान्ति की प्राप्ति करना है लेकिन परिणाम विपरीत दिखाई दे रहा है।अतः आज मानव को व्यवहारिक जीवन-दर्शन की आवश्यकता है । जिसमें विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय हो । सुख-शान्तिमय विश्व की स्थापना के लिये प्रत्येक यह सोचे कि हमें सुख-शान्ति को आचरण में लाना है न कि आचार्य बनना है ।

संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीशचन्द ने प्रस्ताव रखते हुए कहा कि मन, वचन, कर्म की समानता के लिए हमारे सिद्धांत भी समान होने चाहिए । एक को मानने से ही एकता आवेगी, अनेकों को मानने से अनेकता होती है । परमपिता परमात्मा शिव परकाया प्रवेश कर आदि पिता ब्रह्मा के तन में आकर योग की शिक्षा देते है । हम सभी उसी के अमृत पुत्र है अतः हम सभी ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी है । परमात्मा को दिव्य चक्षु एवं दिव्य बुद्धि द्वारा ही अनुभव कर सकते है । अन्त में आपने इस प्रस्ताव को सभी धर्माचार्य विभूतियों व उपस्थित प्रतिनिधियों ने पारित किया ।

प्रस्ताव के अनुसार विश्व शान्ति आध्यात्मिक सम्मेलन निष्कर्ष पर पहुंचा कि समाज की वर्तमान दुःखमय एवं अशान्तिमय अवस्था, नैतिक एवं मानवी मूल्यों के ह्रास तथा परमपिता से मनोयोग न होने के कारण है, मनुष्य स्वरूप विस्मृति के कारण देहाभिमान तथा मनोविकारों से ग्रसित है, धार्मिक समुदाय सद्भावना को बढ़ावा न देकर परस्पर वैमनस्य, हिंसा और नर संहार को खत्म करने के लिए उदासीन है, वर्तमान समय में टी०वी० में हिंसा, मद्यपान, अनैतिक आचरण दिखाने के कारण चरित्र में प्रदूषण बढ़ रहा है । मनुष्य आहार एवं व्यवहार सम्बन्धी प्राचीन मर्यादाओं तथा नियमों को भी तोड़ते जा रहे है तथा धार्मिक स्थान और धर्म प्रचार बढ़ तो रहे है परन्तु लोगों में सदाचार की नींव सुदृढ़ होने के बजाए कमजोर होती जा रही है ।

धर्माचार्यों ने सरकार से सिनेमा, टी०वी०, समाचार पत्र और पत्रिकाओं में हिंसा, मद्यपान तथा अश्लीलता की सामग्री पर प्रतिबंध लगाने तथा स्कूलों कालेजों में नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को महत्व देने की अपील की है ।

सम्मेलन इस सत्यता को स्वीकार करता है कि वर्तमान समय विश्व जिस भयावह स्थिति से गुजर रहा है, उसमें विश्व को सुख-शान्तिमय बनाने के लिए धर्म एवं सभी वर्ग के लोगों के सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है ।

कार्यक्रम के मध्य में जयपुर सेवाकेन्द्र की इन्चाज ब्रह्मा कुमारी सुषमा बहिन ने सामूहिक योगाभ्यास कराया । कार्यकम का संचालन, ब्रह्माकुमारी शशी बहिन, माऊन्ट आबू ने किया तथा अहमदाबाद के ब्रह्माकुमार हसमुख पारिख ने धन्यवाद किया ।

स्नेह मिलन

30 सितम्बर : मेडीटेशन हॉल में आयोजित स्नेह मिलन में महामण्डलेश्वर ब्रह्मानन्द गिरि जी ने अनुभवों की लेनदेन की महत्ता स्वीकार करते हुए कहा- यहां की बहुत सी बातें शास्त्रीय पद्धति के अनुरूप हैं । युग परिवर्तन निश्चित है ।

गृहस्थ में रहते ब्रह्मचर्य का पालन एक क्रांतिकारी कदम है । वर्तमान युग में इसकी सफलता निश्चित रूप से जनसंख्या नियंत्रण में सहायक सिद्ध होगी व भारत सरकार को मदद मिलेगी । यह विचार महामण्डलेश्वर हंस प्रकाश जी ने व्यक्त किये ।

महामण्डलेश्वर गणेशानन्द जी गिरि ने ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्वच्छता, वातावरण में पवित्रता, विचारों की साम्यता, सेवाभाव, मानव मात्र के प्रति कल्याण भावना को श्रेष्ठ बताते हुए अपना सुझाव दिया कि समय प्रति समय इस प्रकार के आयोजन किये जायें ताकि नवीन प्रयोग हो सकें । यह विद्यालय अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर रहा है ।

प्रारंभ में ब्रह्माकुमार लक्ष्मण जी देहली ने अपना गृहस्थ जीवन में ब्रह्मचर्य पालन का आधार स्पष्ट किया और इसकी सफलता का श्रेय ज्ञान व योगाभ्यास को बताया ।

अंत में संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने सभी मेहमानों, महात्मओं का आभार व्यक्त किया और कहा- सुख, शान्ति, पवित्र दुनिया की स्थापना हेतु हम सब एकजुट होकर कार्य करेंगे ।

सभी धार्मिक महानुभावों को ईश्वरीय सौगात देकर भावभरी विदाई पुष्प वर्षा और सुन्दर गीत-"भगवान तेरे घर का..." के साथ की ।

माऊँट आबू : विश्वशान्ति महासम्मेलन मे पधारे स्वामी, सन्त, महामण्डलेश्वर मुख्य ब्र. कु. बहिनों तथा भाईयों के साथ ओमशान्ति भवन के समक्ष खड़े है ।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd No 10563/65-D, (E)—70